अंक-53/54
मार्च 2009

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

होता ई कइसन उतजोग पिया !

❑ रामेश्वर प्रसाद सिनहा 'पीयूष'

होता इ कइसन उतजोग पिया !
छूटे ना रोग पिया !

अलग-अलग खेमा में जाति, धर्म, भाषा
अलग-अलग ढंग के गढ़ाइल परिभाषा
आपस में लागत बा जोग पिया !
छूटे ना रोग पिया !

अगहर के घर बा आतंकिन के डेरा
चोर आ सिपाही के नाता मउसेरा
मिलजुल के भोगऽ मनभोग पिया !
छूटे ना रोग पिया !

स्वारथ के घर में बा छलिया मनसउदा
एक-एक टूटत बा मूल्य के घरउँदा
ढोंग करे योग के प्रयोग पिया !
छूटे ना रोग पिया !

पोखर पर कर्मलीन बकुलन के पहरा
मछरिन के दर्द भइल पहिले से गहरा
सुख के ना जूटे संजोग पिया !
छूटे ना रोग पिया !

साँसत में जिनिगी, बा आफत में सपना
कद के लम्बाई के राजनीति नपना
रेती पर धावत बा लोग पिया !
छूटे ना रोग पिया !

●

बेंचे कऽ तइयारी बा

❑ **कमलेश राय**

अब अँखियन-अँखियन कऽ सपना
बेंचे कऽ तइयारी बा
औने-पौने में घर अंगना
बेचे कऽ तइयारी बा।

उनका हाथे चमकत सोना कऽ
पिंजरा के बदला में
रन में, बन में बिचरत सुगना
बेचे कऽ तइयारी बा।

दहकत धरती के सावन कऽ
बदरा कऽ असरा देके
अब गंगा, कावेरी, जमुना
बेचे कऽ तइयारी बा।

दिन-दिन बेचेहरा भइला से
के रोकी अब तोहरा के ?
हर सूरत कऽ साखी ऐना
बेचे कऽ तइयारी बा।

अबहूँ से तऽ अंखियन कऽ
अंजोरिया के जोगावऽ तू
संझवाती के राखल दियना
बेचे कऽ तइयारी बा।

●

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी
संपादक
डा० अशोक द्विवेदी
संपादन सहयोगी
विष्णुदेव, सान्त्वना
डिजाइन आ ग्राफिक्स
वर्तिका
सज्जा
आस्था
कंपोजिंग
राजीव कुमार 'राजू'

विषेश प्रतिनिधि
गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश' (गोरखपुर), सुशील कुमार तिवारी (नई दिल्ली), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), विष्णुदेव तिवारी (बक्सर, आरा), विनय बिहारी सिंह (कोलकाता), गंगा प्रसाद 'अरूण' (जमशेदपुर), डॉ० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), डा० कमलेश राय (मऊ, आजमगढ़), डा० प्रकाश उदय, विनोद द्विवेदी (वाराणसी), डा० वशिष्ठ अनूप (जौनपुर), जितेन्द्र पांडे (मुम्बई), मिथिलेश गहमरी, कुबेर नाथ पाण्डेय (गाजीपुर), हीरालाल 'हीरा'(बलिया)

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा० ओम प्रकाश सिंह

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक
संपादन-कार्यालय :-
टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-२७७००१
फोन- ०५४६८-२२१५१०, मो०- ०६४१५८१६४५३
e-mail :- ashok.dvivedi@rediffmail.com

एह अंक पर सहयोग- २५/-
सालाना सहयोग राशि १३०/-

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ : ओसे पत्रिका परिवार क सहमति जरूरी नइखे)

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)
www.bhojpuripaati.com

अंक 53 / 54 मार्च 2009

एह अंक में.....

हमार पन्ना
- आधुनिकता का दउड़ में पिछुवाइल/२
- सबसे बड़का चुनाव क असलियत/३

जिन्दगी जिए खातिर
- हाय रे ई टेन्शन/आकांक्षा द्विवेदी/४-५

मुद्दा -
- आधुनिकता आ भोजपुरी समाज/सुशील कुमार तिवारी/६-७

कविता/गीत/गज़ल
- कमलेश राय ● रामेश्वर प्रसाद सिनहा 'पीयूष' /कवर-२
- कन्हैया पाण्डेय/७ ● कृष्णदेव 'घायल'/१४ ● हीरा लाल 'हीरा'/२२
- भगवती प्रसाद द्विवेदी/२४, ● अशोक द्विवेदी/कवर पृ० - ३

उपन्यास
- दाल-भात तरकारी/रमाशंकर श्रीवास्तव/८-१४

सामयिकी
- का लिखीं ? /राजगुप्त /१५-१६

कहानी
- बुढ़उती/ प्राध्यापक 'अचल' /१७-१८

भोजपुरी वेवसाइट : डा० ओ०पी० सिंह/२१-२२

पंडित जी के पतरा
- डा० नरेन्द्र तिवारी/१९-२०

फिल्म-संसार
- रिपोर्ट/अशोक भाटिया/ २३-२४

पाती 3 मार्च 2009

(एक) आधुनिकता का दउड़ में पिछुवइला के कारन.....

देहाती समाज में रहे वाला लोगन खातिर, आधुनिकता माने, शहरी रंग ढंग चाल-ढाल आ तौर-तरीका रहे। भोजपुरिया लोग, जे शहरन से जुड़ल ऊ नया आ आधुनिक बने का कोशिश में नया कपड़ा-लत्ता, आ बोले-बतियावे के स्टाइल का साथे आधुनिक कहाए वाला साज समाज जुटवले में 'माडर्न' कहाए लागल। जे आर्थिक तौर पर पोढ़ रह ऊ घर मकान, कार आ जरूरत के आधुनिक चीज-समान जुटाइ के आधुनिक बन गइल, बाकि अपना सोच-विचार, नजरिया आ पुरातनपंथी खेयाल के कस में पकड़ले रहे।

'आधुनिकता' दरसल सोच-विचार आ देखे का जरिये, बदलाव के ऊ प्रक्रिया रहे; जवना में ढोंग, भेद भाव, पाखंड, अंधविश्वास आ ढकोसला के गुंजाइश ना रहे। सबके समान अवसर आ सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक विकास खातिर, गतिमान वैज्ञानिक, चेतना, जागल विवेक आ समरस भाव पूरा सामाजिक बेवस्था में कायम हो जाव। बाकिर सांच माने में आजो ई बदलाव नइखे गतिमान भइल।

गँवई समाज अभाव, असुविधा, अशिक्षा, गरीबी, अनुदारवादी सामंती सोच आ दबंगई जइसन खराब रोगन से परेशान-हकलान रहे आ कमबेस आजो बा। नया सोच विचार, नया नजरिया आ विवेकपूर्ण व्यवहार आइल बा, बाकिर हलुकाहे ढंग से। पिछड़ापन क अन्हार अतना जबर्दस्त रहे कि छिटफुट अंजोर से पुरहर फायदा ना पहुँचल। मर्द-औरत, लइका-लइकी के भेदभाव, जातीयता, ऊँच नीच के असंतुलन, गोलबंदी आ बड़ छोट का बीच क खाई पटाये के नौबते ना आइल। पंचइती बेवस्था, अपना असंतुलन का कारन, अन्हेरगर्दी, पाखंड, शोशण, जुलुम आ अन्याय के जोरगर, मुखालिफत आ बिरोध तक ना क पवलस। नतीजा में जबरा, हरमेशा अबरा के चंपलस। लोग अलग-अलग खेमा में नेतन क वोट-बैंक बनल।

राजनीतिक प्रोत्साहन आ सरकारी निधियन का जोर से गंवई-नक्शा में जौन भौतिक बदलाव आवे के उमेद रहे, तवन संकल्पशक्ति आ सामूहिक चेतना का कमी से ना आइल। बनरबांट आ निजी फयदा-नुकसान का चिन्ता में अझुराइल जनप्रतिनिधि आ अधिकारी गंवई-निधि के सही आ सार्थक इस्तेमाल ना कर, खेती से कटि के औद्योगिक जगत से जुड़े खातिर शहरन के मुंह कइलस। दुर्भाग ई कि ओके ठवर-ठेकान आ रोजी त मिलल, बाकिर पारिवारिक, समाजिक असंतुलन अंदरूनी स्तर प अउरी बढ़ल। गांव से दूरी बढ़ल आ गंवई-माहौल से अंदरूनी विक्षोभ पैदा भइल।

गंवई समाज के छोट लोगन में देखा-देखी अपना लइकन के पढ़ावे-लिखावे आ अच्छा सर्विसमैन, बनावे के ललक बढ़ल, बाकि ऊ लोग अपना लड़िकन के खेती-बारी क काम-धाम आ अउर जिमेदारियन से अइसन अलग कइल कि ऊ खेती-बारी आ अउर तरह के कामन से से बिल्कुले कटि गइल। लइका पढ़ला-लिखला में लागल बा, त ना गाय-गोरू खियाई, ना लेहना-पताई करी, ना खेती बारी में हाथ बटाईं। आत्मनिर्भरता खतम भइला का नतीजा में, गांवे के लोग दूध-दही, तरकारी खातिर दोसरा क मुहताज हो गइल। मानसिकताई रहे कि अपना गांव-जवार में लोग झुठिया बड़ बने का चक्कर में जरूरत आ सचाई दूनों से मुंह मोड़ लिहलस। लइका दोसरा शहर जाके, भलहीं मेहनत मजूरी करो, रेक्शा चलावो, कुली बनो, बालू निकालो, बाकि अपना क्षेत्र में ए कुल काम से 'प्रेस्टीज फाल' होखे लगी।

समय के मांग, आ सचाई से मुंह फेर के घुटन आ तनाव के अलावा कुछ ना मिली। परंपरा से मिलल ज्ञान आ कर्म के छोड़ के, नया करे आ ढेर पावे का चक्कर में, बहुत कुछ आपन गंवावे के पड़ल। खेती, बागवानी, पशुपालन, हस्तकला, आ क्षेत्रीय काम जइसे काष्ठकला, लौहकला, आदि के छोड़ के कस्बा-शहर में दोसर दोसर काम करे निकलल लोग, ज्यादातर ना एनिये के भइल ना ओनिये के।

ज्ञान-विज्ञान आ सचाई का कसौटी पर कसल जानकारियन का अंजोर में, युगधर्म का अनुसार पुरान मान्यता, प्रथा आ रूढ़ियन के जाँच-पड़ताल होत रहे के चाहीं। एसे विकास आ तरक्की क नया रास्ता निकलेला, नया अवसर भेंटाला। पहिलहूं एही तरह से आधुनिक सोच आ नजरिया अपना के लोग समाज के बदले आ नीक बनावे के कोशिश कइले रहे। स्वामी दयानन्द सरस्वती, राजा राम मोहन राय जइसन लोग एके बदलाव क औजार बनवले रहे। जाति-उपजातियन में बंटल समाज से छुआछूत, ऊँच-नीच आदि के दकियानूसी आ अलगाववादी भावना खतम क के, समरस आ सहभागी समाज बनावे आ आदमी-औरत के बराबर समझे के पीछे; प्रगतिशील आ आधुनिक विचार रहे, जवना से गरीब, वंचित आ शोषित लोगन के उबारल जा सकत रहे। आ समाज में पइसल जड़ता आ पाखंड के खतम कइल जा सकत रहे।

भोजपुरी समाज में, आधुनिकता के राह पर आजो संघर्ष चल रहल बा। ई संघर्ष अंदरूनी आ बाहरी दूनों स्तर पर बा। तमाम तरह क समाजिक जकड़न, लचर कानून-व्यवस्था, राजनीतिक विसंगतियन आ भोजपुरिया लोगन के परिस्थितिजन्य जड़ता का कारन पाखंड, भेदभाव, अन्याय, शोषण आ गुलामी से पूरा-पूरा मुक्ति नइखे मिलत। विद्रोही आ जुझारू स्वभाव वाला आस्थावान भोजपुरियन के प्रतिभा आ सामरथ का बावजूद आधुनिकता के दउड़ में अतना पिछुवाइल नीक नइखे लागत।

(दू) सबसे बड़का चुनाव क असलियत.....

एमे कवनो शक नइखे कि टी० एन० शेषन का समय से चुनाव आयोग के विश्वसनीयता बढ़ल। भारतीय लोकतंत्र में चुनाव के तौर तरीका बदलल। निष्पक्षता आ बेहतर चुनावी माहौल बनावे में चुनाव आयोग के काफी सराहना मिलल। आगा चले के वोटर लिस्ट (मतदाता सूची) के सत्यता आ प्रमाणिकता खातिर कदम उठावे के साथ-साथ ''मतदाता पहचान पत्र'' (वोटर आई डी) जारी करे खातिर बेर-बेर अभियान-दर-अभियान चलावल गइल। एकरा खातिर जिला तहसील आ ब्लाक स्तर पर मतदाता पहिचान-पत्र बनावे खातिर बेर-बेर फोटोग्राफी आ सूची सुधार क व्यवस्था त भइल, बाकिर ओकर ''फालो-अप'' आ ''पहचान-पत्र'' के वितरण सुनिश्चित करे में बहुते ढिलाई देखे के मिलल। नतीजा में एह १५वीं लोकसभा चुनाव ले सबके पहचान पत्र देबे के वायदा ना पूरा हो सकल।

जब जब चुनाव आवेला त ओसे कुछ दिन पहिले एह प्रक्रिया मे सरगर्मी तेज हो जाला। सूची सुधार आ फोटोग्राफी के कई चरण में चले वाला अभियान अखबार में छपे लागेला बाकिर का जाने काहे, चुनाव का बेरा ले पहचान-पत्र या त बन ना पावेला या त बंट ना पावेला। हमरा नियर कतने लोग आपन आ अपना परिवार क तीन-चार बार फोटो खिंचावल, फार्म भर-भर के फोटो तक लगा के दिहल, बाकिर, 'पहचान पत्र' ना भेंटाइल। कुछ लोगन के 'पहिचान पत्र' मिलबो कइल त गलते जानकारी आ मिसप्रिंट वाला। तुर्रा ई कि मतदाता सूची में ओ लोगन क फोटो ना रहे।

कहल जा सकेला कि एतहत बड़हन आ विशाल जनसंख्या वाला देश में मतदाता पहचान पत्र के १०० प्रतिशत, शुद्ध, सही आ समुचित वितरण आसान काम नइखे; बाकिर ईहो सही बा आ मानहीं के पड़ी कि एह काम में जवना गंभीर आ सुव्यवस्थित कोशिश क जरूरत बा, ऊ होत नइखे। जवन कारन होखे, बाकि लापरवाही आ गलती खातिर जिमवार लोगन पर कवनो कार्यवाहियों त नइखे होत। गांव क छोड़ी, शहरन में, मुख्य तहसील सदर में रहे वालन के 'पहचान पत्र' नइखे। सदर के लेखपाल ओइसही बड़ अधिकारी होला। घूम-घूम के पहचान-पत्र बांटे के कहाँ फुर्सत ?

आज जब हर काम में ''पहचान पत्र'' जरूरी चीज घोषित हो चुकल बा ओके बनवावे आ पावे खातिर लोग तत्पर नइखे। कामचलाऊ, निवास प्रमाण पत्र जाति प्रमाण पत्र जारी कराइ के काम त चला लिहल जाता, बाकि स्थाई ''पहचान पत्र'' बनवावे खातिर लोग नइखे भिड़त। चीनी, किरासन, छूट वाला खाद-बीया, स्कालरशिप, पिन्सिन भा अउर तरह के अनुदान पावे खातिर, जतना जोर से लोग दउरेला ओतना ''पहचान पत्र'' खातिर ना नु दउरी ? कतने लोग त एही बिना वोट देबे से कतरा जात बा। हमन का तरफ ४० से ५० प्रतिशत वोट पड़त बा। ऊहो ठेलि-ठाल के। ओही में जे बीस भा पचीस प्रतिशत वोट पा लेता, ऊ १०० प्रतिशत क प्रतिनिधि कहाता। का ईहे हमनी के लोकतंत्र क विकास ह ?

चुनाव आयोग, सही चुनाव आ सही मतदान खातिर दिन पर दिन कड़क होत जात बा, बाकि देश के राजनेता आ नौकरशाही में बहुत लेाग अइसन बा जेकरा पर या त एह कड़ाई के असर नइखे या ऊ अपना जिमवारी के अपने 'स्टाइल' में निभावत बा। अयोग के नाराजगी के ऊ खतियावतो नइखे। 'आदर्श आचार संहिता' लागू भइला वादो, राजनीतिक नेता आ अफसरन में कई लोग अइसन बा, जेके या ता एकर परवाह नइखे या ऊ पकड़ में आवे से बंचे के राह खोज लेता। नैतिक मूल्यन में जवन गिरावट बा, ऊ त बड़ले बा, अब सहजता आ शालीनता सपना हो गइल बा। अइसना में स्वतंत्र आ निष्पक्ष चुनाव के माहौल कइसे तइयार होई? अपराधी, माफिया, मौकापरस्त दलबदलू आ दागी लोग चुनाव लड़त बा। राजनीतिक दल ओके पाक-साफ बता के टिकट देता। ऊ लोग जीतियो जाता। काहें ? सोचीं! का हमहन में दोष नइखे ? का इहे लोकतंत्र क विकास हऽ ?

'बुलेट' क जबाब ''बैलेट'' से दिहल जाता। बाकिर ''बैलेट'' सही सही पड़े तब न? जब हमनी का बिना भय सही आ गलत के फैसला ले सकीं जा, जब हमनी पर जाति-धर्म के चश्मा ना चढ़े, जब हमनी क इस्तेमाल वोट बैंक का रूप में ना होखे। आ १०० में से ७५ प्रतिशत वोट पड़े, तब कहाई कि हमन क लोकतंत्र क विकास भइल बा आज क स्थिति देख के त इहे लागत बा कि हमहन का आगा बढ़ला का बजाय अउरी पिछुवाइले जा तानी जा। हमन क, भावुकता, उदासीनता आ लापरवाही एकरा खातिर कम जिमवार नइखे !

अशोक द्विवेदी

('स्ट्रेस' आ 'तनाव' आज के बड़हन मानवी समस्या बा। 'स्ट्रेस मैनेजमेन्ट' पर नया ढंग से फोकस करत विचारपरक लेख)

हाय रे ई टेन्शन !!

❑ आकांक्षा द्विवेदी

'ओह् आऽऽ इ....आह रे।' हमके घाव लग गइल। बड़ा दरद होता, ओह !!" इहे निकलल रहे मुँह से हमरा। तब हम छोट रहनी। अपना भाई, बहिनिन में सबसे छोट। सभकर धेयान हमरा ओर खिंचा गइल रहे। का भइल, बड़की दीदी अँकवारि में भर लिहली, मझिली हमरा ठेहुना के सुहुरावे लगली। मम्मी दउरि के अइली, का भइल हो ? उनके देखते हमार मुँह रोवाइन हो गइल। आँखि डबडब.....हम सुसुके शुरू क दिहनी। हालांकि दर्द आतना ना रहे पहिले, बाकिर सबके देखते, सबकर ढेर सहानुभूति पावे का चक्कर में एक बेर हम घाव लगला आ आ दर्द का बारे में सोचलीं त बुझाइल कि 'दरद' सचहूं पहिले से ढेर बढ़ गइल रहे। खेलला का चक्कर में, जवना घरी घाव लागल रहे, ओतना ना बुझाइल रहे।

बड़की दीदी हरदी-चूना गरमा के ठेहुना पर लगवली। मम्मी चउकी पर बइठवली, 'बड़ी लापरवाह हियऽ ई, कूदे-फाने में तनिको ना डेराले। इहो ना सोचेले कि लइकी हऽ ई, घाव लाग जाई त का होई ? हम जानत रहनी मम्मी उपरे उपर खिसियात बाड़ी, भितरे भीतर हमरा खातिर चिन्ता करेली। रात ले हम चुपचाप ओठँघल रहनी। नाश्ता-चाय-खाना, सब जगहिए पर पहुँचावल गइल। सूते का पहिले हरदी-चूना हटा के 'आयोडेक्स' मलाइल। अँगौछी बन्हाइल न जाने का-का उतजोग कइल गइल।

लइकाई क एह छोट आ मामूली घटना पर, आज जब सोचत बानी त हँसी आवत बा। चोट-घाव पर दर्द त होइबे करेला, बाकि 'दरद' के स्तर आ मात्रा कम, बेसी हो सकेला। एगो साधारण दर्द, जवना के भुलाइल जा सकेला, हमनी का ओकरा बारे में ढेर सोच के, महसूस कइ के, चिन्तित होइके अउरी बढ़ा लेनी जा। बुझला दर्द से हमनी क ध्यान ओने जाला, ओकरा पर सोच सोच के हमनी का भीतर एगो दबाव आ दुख पैदा होला। इ एक तरह क तनाव आ स्ट्रेस ;जतमेद्ध पैदा करेला। एह दुख-तनाव भा 'स्ट्रेस के हलुकाहे ढंग से लेके, भा ओरा बजाय कवनो अउर जरूरी चीज का बारे में सोच के, अपना मन-मिजाज के ठीक कइल जा सकेला। बाकि, अइसन अक्सर ना हो पावेला।

आदमी भगवान के एगो अजीब आ अचरजकारी सिरजन ह, जेकरा बारे में, एकदम निश्चित कुछ ना कहल जा सके। दरसल हमनी का खुदे परेशानी पैदा करेनी जा, फेर ओकरा बारे में सोच के, फिकिर में परि के दुखी होनी जा आ ओकर समाधान खोजत दिन-रात एक क देनी जा। साइत-संजोग समाधान मिलबो कइल त ओह घटना-चक्र से कवनो सबक ना लेके उहे गलती दुबारा करेनी जा। आदमी के इहे सुभाव बा। सब जानेला आ सुनेला कि जिनिगी चार दिन के क्षण भंगुर आ नाशवान हऽ बाकि कतने लोग एह चार-दिन के दुखे-तनाव झेलत बिता देला। कतने लोग मानसिक अशांति से उबिया के घरे-गिरस्थी छोड़ देला।

अंगरेजी के प्रसिद्ध कवि शेक्सपियर एगो कविता में आंतरिक सुघराई (इन्टर्नल ब्यूटी) आ शारीरिक सुघराई (फिजिकल ब्यूटी) के वर्णन करत बतवले बाड़न कि शरीर के सुन्दरता भौतिक (मैटिरियलिस्टिक) होले आ हमहन ओकरे चक्कर में पूरा उमिर पड़ल रहेनी जा, जबकि भीतरी सुन्दरता (इन्टरनल रियलिटी) असली सुघराई के नजरअंदाज कइ के साँच, ज्ञान आ असलियत से बिमुख हो जानी जा।

मानसिक अशांति, स्ट्रेस भा तनाव एही भरम का चलते ढेर होले। केहू कतनो ढेर कमा लेव, केतनो आधुनिक साज सज्जा आ सुविधा बटोर लेव, दुनिया के देखावे आ धौंस जमावे खातिर अपना बड़प्पन के प्रदर्शन खातिर उतजोग करत-करत हमनी का अनचहले, एगो जाला अपना चारू ओर बीन लेइला जा आ ओही अझुरहट, परेशानी आ फिकिर में परेशान आ तनावग्रस्त होखीलां जा। दरअसल हमनी के आपन चाहल आ सोचल ना मिलेला त दुखी होनी जा। मानसिक अशांति आ शांति दूनों के सिरजन ज्यादातर हमहन खुदे करेनी जा।

साँच कहीं त अगर रउरा सब साधन-सुविधा आ सुखकारी साजो सामान से भरल-पूरल बानी बाकि मन से भा अपना अंदर से शांत, सहज आ संतुष्ट नइखीं, चिंतित बानी त, रउरा खातिर कूल्हि सुख सुविधा व्यर्थे बा। अगर रउरा अपना व्यक्तित्व, सोच-विचार आ परिस्थितियन का मुताबिक अपना के संभाले आ सहज बनावे के तरीका नइखीं सोचत खोजत त ''टेंशन'' होइबे करी।

हमार एगो सहेली कहेले कि विपरीत परिस्थितियन से हंसि के लड़े के चाहीं। बाकि हमके लागेला कि ऊ हंसी अगर सुभाविक नइखे, भा भीतर से खुद ब खुद नइखे जनमल त, झुठहूं, हंसला क कोशिश कइल आ दोसरा के देखावे खातिर झूठ मूठ हंसल, एक तरह से हमनी का भीतर एगो नए तरह के एकाकी आ नुकसान पहुँचावे वाला 'टेंशन' के पोसत रही। एमे कवनो शुबहा नइखे कि विपरीत परिस्थितियन से समायोजन कइल, तालमेल बइठावल एगो कठिन, बाकि कलात्मक साधना हऽ। आदमी अगर

चाहि देव त, का ना क सकेला ? एक एगो पंगु, कमजोर आ लाचार लोग कठिन, चमत्कारी आ विस्मयकारी काम के अंजाम कइसे दे देला? ओकर भीतरी चाह, लगन आ परिश्रम का साथे, अपना पर गजब के नियंत्रण आ अंदरूनी विश्वास रहत होई।

शारीरिक कष्ट ले बेसी दुखदायी मानसिक कष्ट होला। हम अपना व्यक्तिगत जीवन के कुछ अनुभव बतावल चाहब। विद्यार्थी जीवन एगो निश्चित समय-सीमा क होला, ओहू में ओकर आखिरी हिस्सा, कैरियर क टर्निंग-प्वाइंट भा प्रस्थान-बिन्दु कहल जाला। लगभग एही समय में बार-बार बीमार पड़ल, अस्वस्थता आ चोट-चपेट से शारीरिक कष्ट आ दुख का साथ, मानसिक अशांति आ पीड़ा तब ढेर होखे जब कवनो प्रतियोगी-परीक्षा, इन्टरयू, सेलेक्शन का टाइम पर ना शामिल भइला क असमर्थता हो जाव। रउवा सोच सकेनी हमरा भीतरी पीड़ा आ छटपटाहट का बारे में। हम शरीर से कमजोर रहनी बाकि मानसिक मजबूती हमेशा हमके धीरज देव। हम अपना अनुभव के शब्द में बयान नइखीं क सकत। दिन पर दिन हफ्ता-दर हफ्ता, महीना अइसनो बीतल कि, सब कुछ अछइत कुछ ना कर पवला के मलाल आ दुख हमरा भीतर जबर्दस्त तनाव पैद क देव, बाकि मम्मी-पापा, भइया आ बहिन लोग हमके ओघरी लगातार मानसिक प्रोत्साहन देव, धीरज बन्हावे। हम भोलेनाथ भगवान शंकर के ध्यान करीं, अपना पिता, भाई आ बड़ बहिनिन लोग के प्रेरना, प्रोत्साहन, 'स्पिरिट' का बारे में सोच सोच के अपना अंतर्मन के मजबूत करीं। सहज भाव से हर पहलू के लेत-लेत हमरा आत्मबल आ भीतरी क्षमता के बहुत विकास भइल। हमरा भीतर सकारात्मक उर्जा, शांति आ अपना कर्म पर विश्वास दिहला का पीछे, हमार परिवार जरूर रहे, बाकि हमार अपनो संकल्प, मेहनत आ कोशिश रहे। एह कूल्हि का बावजूद एकाध बार अइसनो लागल कि कुछ ना हो पावल, सब जस के तस स्थिर बा, हम सचहूं, पछुवा गइनीं आ फेर कूल्हि कइल-धइल गुड़ गोबर हो जाव। बाद में हमके साफ-साफ बुझाये लागल कि अपना कमी कमजोरी आ असमर्थ स्थिति का कारन अपना के हीन मानल मूर्खता बा। हम अपना भीतर एह 'हीनता' के कवो पनपे ना दिहनी।

हम भगवान के कइसे धन्यवाद दीं कि बिना कवनो कारन उनका पर हमार दृढ़ विश्वास बढ़ल आ हम आपन समय, शक्ति आ विचार अपना तकलीफ, असफलता, असमर्थता आदि पर खर्च कइला का बजाय उनहीं पर बटोरनी आ बदला में मिलल हमके शांति, चैन, तसल्ली आ आगा बढ़ला के ऊर्जा। एह अनुभव के शब्दन में बान्हल आ बखानल ना जा सके। सांच मानी एसे हमरा भीतर के दुख, टेंशन 'स्ट्रेस' बहुत कम हो गइल।

हम इहे कहब कि 'टेंशन' खतम करे के कवनो मशीन बजार में ना बिकाय, कुछ डाक्टर, हितैषी लोग सलाह/सुझाव भलहीं दे देव, बाकि एके दूर करे के भा एके खतम करे के चाभी रउरे भीतरे बा। रउवा खुद दू-चार भा पाँच-दस मिनट निकालीं। आंख बन करीं आ सोचीं कि परेशान आ दुखी होके आपके का मिलल? आप जेके आपन इष्ट मानत होखीं भा संकट का बेरा, जेवना देवी देवता, अल्लाह-खुदा, क्राइस्ट के मन परत होखे उनके इयाद करीं, आ कहीं- ''हम बहुत गल्ती कइनी, अब ना होखीं। खाली रउवा हमार राह देखावे वाला, भूल चूक सुधारे वाला मार्गदर्शक हईं। आपन दया, करूणा आ प्रेम हमके दीहीं, आपन असीस दीहीं कि हमार जीवन अर्थहीन आ बेकार ना होखे।'' आपके ध्यान आ प्रार्थना आपके चित्त के शांत करी आ अइसहीं करत-करत आपका भीतर एगो नया उर्जा पैदा होई। फालतू क भागमभाग, दुश्चिन्ता, आ 'तनाव' के झटकार के अपना बारे में, थोरिकी देर सोचला खातिर समय निकालल त खुद रउरे हाथ में बा।

मानसिक अशांति, टेन्शन आ स्ट्रेस आज पूरा संसार के समस्या बन गइल बा। एसे छुटकारा खातिर लोग योगा आ शांति प्राप्ति क प्रशिक्षण कैम्प करे लागल बा। बाकि सबसे जरूरी चीज ई बा कि रउवा ई सब जब भी करीं, पूरा मन से करीं, पूरा विश्वास से करीं, तब्बे कुछ 'रिजल्ट' मिली। मन के 'एकाग्रता' आ शांति खातिर हम पहाड़, जंगल आ मन्दिर में जाके तपस्या, आ साधना करे खातिर नइखीं कहत। हम त, रउरा के, आपन जिनिगी अर्थ से जीए खातिर, नया आ शांतिमय ढंग से जिए खातिर ई सब बात कहत बानी आपन निज क अनुभव बाँटत बानी। मन के शांति, मन क सुख सबसे बड़ धन ह5। अगर रउरा ओके पा लिहनी आ ओकर मजा उठा लिहनी त खुदे समझ जाइब कि बाकी सब रउरा लगे अपना आपे खिंचात चलि आई।

तनाव भा 'स्ट्रेस' क प्रबन्धन आज का जुग क सबसे पहिल आ जरूरी काम हो गइल बा। लोग पहिले से ज्यादा कठिन वक्त में, तेज होड़ आ चढ़ा ऊपरी का दौर में जी रहल बा। आज के युग चहला, सोचला का बाद, कठिन मेहनत आ विवेक के उपयोगी इ स्तेमाल से 'चाहल' के पवला के बा। 'चांस' मिलला का बाद ओके भुनवला के बा। चूक के गुंजाइश नइखे। अइसन, परिस्थिति में, रोजमर्रा के जरूरी चीजन क इ इंतजाम कइला का साथे-साथ अपना भीतरी आ बाहरी जथारथ से संतुलन बनवले रखला खातिर; हमहन के आपन पाछिल अनुभव से सीख लेबे के चाहीं आ नया करे खातिर 'प्लानिंग' क के क्रियाशील होखे के चाहीं। अपना भीतर पैदा होखे वाला 'टेंशन' के कंट्रोल आ ओके 'व्यवस्था' दिहल हमनी खातिर सबसे जरूरी काम बा।

मुद्दा-

आधुनिकता, स्तरीकरण, चेतना-निर्माण आ भोजपुरी समाज

- सुशील कुमार तिवारी

आधुनिकता के विकास के सामाजिक स्तर पर संचरण एगो बहुआयामी प्रक्रिया ह। एकरा खातिर सामाजिक आ आर्थिक स्तरीकरण आ सशक्तीकरण बहुत जरूरी हऽ। सामाजिक स्तरीकरण जहाँ व्यक्ति आ समजा के बीच पनपे वाला सम्बन्ध के सकारात्मक, संतुलित आ विशेषीकृत बनावेला, ओइजे आर्थिक सशक्तीकरण संसाधन के उपलब्धता सुनिश्चित कइ के निर्माण प्रक्रिया के तीव्र, बहुआयामी, गतिशील तथा गैरसमस्यापरक बनावेला। कवनो व्यक्ति आ समाज, दूनो के संतुलित उपलब्धता के आधारे पर विकसित आ आधुनिक हो सकेला।

भोजपुरी समाज में आजादी के बाद सामाजिक स्तरीकरण के प्रक्रिया में लगातार गतिशीलता रहल बा। जाति विभाजित समाज में पिछड़ी आ दलित जातियन के स्तरों में उल्लेखनीय सुधार भइल बा। लेकिन सामाजिक स्तरीकरण के तुलना में आर्थिक स्तरीकरण, उत्थान आ सशक्तीकरण के प्रक्रिया से लगभग सम्पूर्ण भोजपुरी समाज अछूता बा। आर्थिक स्तर पर व्यवस्था परक कमजोरी के कारण आजो ई एगो प्राक्-आधुनिक अर्थव्यवस्था में बा। खेती लगातार घाटा के सउदा भइल जात बा। छोट आ मझोला किसान संसाधन तथा आर्थिक दक्षता के अभाव में उचित मात्रा में उत्पादन नइखन कइ पावत। जवन उत्पादन होतो बा, ओकरा के उचित मूल्य प्राप्ति खातिर ''वेट ऐण्ड वाच'' के पद्धति ना अपना पावे के कारन ऊ ओके औने-पौने दाम पर बेचे के मजबूर बाड़े।

शिक्षा व्यवस्था के स्थिति विसंगतिपूर्ण होखला के कारण रोजगार सृजन में लगातार बाधा आ रहल बा। बहुसंख्यक जनता के पास एतना आर्थिक क्षमता नइखे कि उ अपना लइकन के प्राइवेट-पब्लिक स्कूल में भेज सके, सरकारी स्कूल में पढ़ाई के स्तर दयनीय बा। शिक्षा पद्धति क समस्यामूलक होखला के कारण बहुसंख्यक छात्र-वर्ग में ऊ विवेक आ बौद्धिकता के निर्माण नइखे हो सकत कि ऊ विकसित आ आधुनिक समाज के निर्माण में आपन योगदान दे सके।

आधुनिकता के निर्माणकारी परियोजना के प्रमुख तत्व औद्योगिकीकरण से, ई सम्पूर्ण क्षेत्र लगभग अछूता बा। एह क्षेत्र में बड़े-बड़े कल कारखाना अउर तत्सम्बन्धित औद्योगिक संस्कृति के घोर अभाव बा। औद्योगिकरण अपना संगे गतिशीलता पेशेवरपन आ कार्य-संस्कृति के विकास करेला। एकरा अभाव में भोजपुरी क्षेत्र में वैकल्पिक रोजगार-सृजन के संभावना ना के बराबर बा, कार्य-संस्कृति के समुचित विकास न भइला के फलस्वरूप जड़ता आ बेकारी लगातार बढ़ रहल बा। छोट-मोट उद्योग धन्धा एकदम चौपट हो गइल बाड़े। ग्रामीण समाज के उ वर्ग जवन खेती के अलावा दस्तकारी, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, बर्तन निर्माण आदि छोट-छोट काम करके आपन जीवन-यापन करत रहे ऊ आर्थिक विपन्नता के कगार पर खड़ा बा आ दोसर रोजगार सृजन खातिर संघर्ष कर रहल बा।

आधुनिक समाज में धन के संचरण जेतना तेजी से होला, (बाजार में धन के आवाहाजाही के स्रोत जेतना अधिक होला) विकास के प्रक्रिया ओतना तेजी से बढ़ेला। लेकिन इहाँ अइसन बात नइखे। बहुसंख्यक जनता के पास त समुचित मात्रा में धने नइखे आ जेकरा पास बा, ऊ ओके लेके बाहर निकल जात बा। अगर बाजार में लगावतो बा त ओकर फायदा ''ट्रिकिल डाउन'' (नीचे तक रिसाव) तक ना होके ''अपर लेयर'' (उपरी स्तर) तक रह जात बा। भोजपुरी समाज में मुक्त आर्थिक प्रतिस्पर्धा के अभाव तथा संरक्षित पूंजी के फलस्वरूप श्रम के उचित मूल्य नइखे, ना आर्थिक व्यवस्था में कवनो आधुनिक हलचल बा।

आधुनिक के महत्वपूर्ण मानक बाजार के भोजपुरी समाज पर प्रभाव लगभग एकस्तरीय आ असंतुलित बा। पूंजीवादी विकास प्रक्रिया के अंतर्विरोध बाजार के रास्ते एह समाज के उपर सकारात्मक कम, नकारात्मक प्रभाव ज्यादा पैदा कर रहल बा। बाजार के प्रभाव से सांस्कृतिक संक्रमण के स्थिति त जरूर पैदा भइल बा, परन्तु सांस्कृतिक परिवर्तन के प्रक्रिया विकृति मूलक हो गइल बा। आर्थिक ढांचा कमोवश प्राक्-आधुनिक बा। गांवन में खेती के ढर्रा अभी भी पारंपरिक बनल बा। कस्बों में छोटे-छोटे व्यवसायी संतुलन एवं समृद्धि खातिर संघर्ष करत बाड़े। शहर में उहे व्यवसायी फायदा में बाड़े जेकरा पासे एतना आर्थिक विकल्प बा कि ऊ बाजार के मांग के हिसाब से अपना व्यवसाय के ढाल सकसु। मुनाफा के फलस्वरूप उत्पन्न धन के एगो बहुत बड़ मात्रा जमाखोरी आ कालाबाजारी में जा रहल बा जवना कारण रिलक्टेन्ट आ इमर्जेन्ट व्यापारी वर्ग के बाजार में प्रवेश बहुत मुश्किल बा।

कुल मिलाके आर्थिक स्तरीकरण के प्रक्रिया स्थिरीकरण के शिकार हो गइल बा। ऊपरी स्तर पर देखला प इ लाग सकेला कि एगो बहुत बड़ वर्ग नौकरी या नवीन व्यवसाय के क्षेत्र में आइल बा आ पहिले के अपेक्षा काफी समृद्धों भइल बा। बाकि वास्तव में ई समृद्धि के कवनो समकालीन अर्थ या समसामयिक महत्व नइखे। एह नव-विकसित मध्य वर्ग के आर्थिक स्तर आज के मांग के हिसाब से नइखे बढ़ल, काहे कि जवना तेजी से ऊ एह समृद्धि के प्राप्त कइले बा ओकरा से कहीं ज्यादा तेजी से समृद्धि के मानक आ बाजार के ''पैराडाइम'' (प्रतिमान) बदल गइल बाड़े। वास्तव में, ओकरा स्थिति या बाजार के मांग के बीच के फांक अभी भी बनल बा, स्वरूप भले बदल गइल होखे। कुल मिलाके जवना वर्ग के आधार पर ई सिद्ध कइल जाता कि गरीबी मिट रहल बिया आ समृद्धि आ

रहल बा, ओकरा विकास के प्रक्रिया अभी भी काफी धीमा, आ स्तर थोपल आ अपर्याप्त बा।

भोजपुरी क्षेत्र में वैचारिक जड़ता भा राजनैतिक अवमूल्यन के कारण आर्थिक स्तरीकरण में व्याप्त मानकन, के एगो आधुनिक आ गतिशील अर्थव्यवस्था के अनुकूल बनावे के कवनो खास कोशिशो नइखे दिखाई देत। एह असंतुलन के फलस्वरूप आधुनिक सभ्यता के निर्माण आ एगो आधुनिक समाज के रूप में भोजपुरी समाज के मूल्यांकन कइला प दुविधापूर्ण आ दिशाहीन समाज के रूप में ई सामने आवत बा। एगो अइसन समाज जवना के मूल्य चेतना दुविधाग्रस्त बा, विकास के प्रक्रिया जड़ताग्रस्त बा आ लगातार असुरक्षा के बोध बढ़ल जात बा। आधुनिकता के विकासमूलक महाख्यान लगातार असफलता के तरफ बढ़ रहल बा आ चेतना निर्माण के प्रक्रिया संकट में बा। स्तरीकरण में लगातार बढ़ रहल असंतुलन के फलस्वरूप अइसन मूल्यहीन परिवेश के निर्माण हो रहल बा जहाँ सामाजिक संस्कृति के दंश भरे वाला भोजपुरी समाज में लगातार एकाकीपन आ क्षणवादी परिवेश बनल जात बा। ''जेनरेशन गैप'' आ परंपरा तथा आधुनिकता के द्वंद के बीच सुरक्षित आ भविष्यवादी ढर्रा निकाले के खातिर बहुत व्यापक पैमाना पर प्रयास के जरूरत बा। अगर ई उपाय ना होई त भोजपुरी समाज के भविष्य अंधकारमय बा। जरूरत बा। अगर सामाजिक आ आर्थिक स्तरीकरण के प्रक्रिया के संतुलित आ जनोन्मुख बनावे के, तबे आधुनिकता के विकासवादी प्रोजेक्ट सफल हो पाई। एह काम में सरकारी व्यवस्था ले ढेर भोजपुरी क्षेत्र के रहे वालन में बोध ज्ञान आ जागरूकता के जरूरत बा।

अब चुनाव के बेरा आके.....

– कन्हैया पाण्डेय

चटले सीति पियास न जाई,
हमनी के भरमाईं मत !
क्षण भंगुर सत्ता के मद हऽ
एकरा पर उतराईं मत !

हमनो के बेखटक जिये दीं
लुगरी फाटल तनी सिये दीं
रस्ता-घाटे, डांड़ सिवाने
झूठे टांग अड़ाई मत।

पांच बरिस ले खूब छकवनी
वादा आपन खूब निभवनी।
जात-पांत आ पिछड़ा अगड़ा
में, हमके अझुराईं मत।

अतना दिन ले हाल न पुछनी
दुख बीपत में कबो न झंकनी।
अब चुनाव के बेरा आके
सबुज-बाग देखलाईं मत।

धीरे-धीरे घाव भरे दीं,
जरत करेजा अउर जरे दीं।
मदद-नांव पर देके रुपया,
अब हमके फुसिलाईं मत।

उपन्यास

गतांक से आगे.....

'दाल भात तरकारी' के अगिला भाग

तिसरका कलछुल (तिसरा अध्याय)

- रमाशंकर श्रीवास्तव

जाड़ा पाला के दिन नियर कइसे बीत गइल जिनिगी के एतना समय, पतो ना चलल। आपन चेहरा ऐनक में रोज-रोज देखला पर गते-गते डगरत जिनिगी के फरक ना पता चलेला। जब केहू दूर के आदमी देखेला त उहे बतावेला- आरे तहार इ दशा हो गइल? एक आदमी टोकले- का हो मथुरा, बीमार रहलऽह का? चेहरा त एकदमे डाउन हो गइल बा। तीन साल पहिले तहरा के देखले रहनी त ओ चेहरा के रंगे दोसर रहे।

एगो दोसर जाना हाल पूछले-आपको शुगर तो नहीं हो गया है? बड़ी खराब बीमारी है ससुरी। पहाड़ को शुगर हो जाय तो वह साफे अररा के समुन्दर में ढिमला जायेगा।

उनका बात पर हमरा हंसी आ गइल। बात चाहे मजाके में कहा गइल होखे, सच्चाई त रहबे कइल। हमहूं दू साल से चीनी के चपेट में बानी। भीतरे-भीतरे देह गलल जा रहल बा। वजन कम हो गइल। दवाई त खाते बानी। डाक्टर कहले-चावल छोड़ दीजिए। हमार जवाब रहे-चावल छोड़ने के पहले हम दुनिया छोड़ देंगे, यह मंजूर है डाक्टर साहेब। इहे तो एगो खाना है कि भात दाल तरकारी खा के आदमी टंच हो जाता है। ढेर रोटी खनिहार लोग के देखनी। परहेज करत रह गइल लोग आ जमराज उठा के ले गइल। इसलिए जो होता है सो होने दीजिए। जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिए। आप दवाई लिखिए, फीस लीजिए। आगे का नतीजा हमारे भाग पर छोड़ दीजिए।

इ सब चिन्तवे त आदमी के खा जाला। ना त इ चीनी के रेाग काहे के आइत हमरा पंजरा। निर्मला सियान हो गइली। एने-ओने लोग टोक देता- अपनी बेटी की शादी कब कर रहे हैं मथुरा बाबू?

दुनिया के आगे अब कौन सफाई देत फिरीं कि निर्मला के शादी में काहे देर हो रहल बा। फैक्ट्री के तनख्वाह से घर खर्चा नइखे आँट पावत। खेती-बारी से जवन दूचार मन अनाज आवत बा उहो सब एही गृहस्थी मे झोंका जाता। खर्चे बर्चे के ताना बाना में मन अझुराइल रहेला। तब अइसन तनाव में चीनी के रेाग ना धरी त का धरी। शकुन्तला बेर-बेर ठेलियावत रहेली- जाईं डॉक्टर के लगे। ठीक से जांच करा लीं। नाहीं भीतरे भीतर कौनो दोसर रोग मत पकड़ लेव।

- सामने जवन पकड़ले बा ओकर चिन्ता कर ऽ शकुन्तला। जवान बेटी के देख के फिकिर बढ़ल जाता। पता ना, हमनी खातिर भगवान कहां जाके सूत गइल बाड़े। एही गांव में कइसन-कइसन लड़की डोला पर चढ़के ससुराल चल गइली सन आ एगो हमार निर्मला अबले कुंवार बइठल बाड़ी। तीन साल से केतना हितई में गइनी। जेकरा से दुखड़ा ना रोएके ओकरा सामने गिड़गिड़इनी-हमरा बेटी खातिर एगो लड़का बताई लोगिन। तबो कुछ तिराइल ना। भगवान हमार कठिन परीक्षा ले रहल बाड़े। पंडित, ज्योतिषी, ओझा-गुनी, साधू-महात्मा सभ के दुआर जाके गोहार लगइनी, देवता लोग के आगे माथा टेकनी, भारा भखनी, दू गो सावन में कांवर ढोअनी तबो कवनो सुनवाई ना भइल।

शहर के एगो दलाल के लगे गइनी। सुनले रहनी कि उ आज तक ले सैकड़न शादी-वियाह करा चुका बाड़े। बड़ी भरोसा लेके गइनी। उ मंगिहे त हजार दू हजार देइयो देब बाकिर कवनो काबिल लड़िका से हमार निर्मला के बियाह करा देस।

सुबह के रेलगाड़ी से शादी केन्द्रवाला शर्मा जी के घरे चहुंप गइनी। हम त बुझत रहनी कि सबसे पहिले हमहीं चहुंपल बानी। बाकिर ओहिजा त छ आदमी हमरो से पहिले बेंच पर बइठल रहे। सभे के साथ शादिए के समस्या रहे। केहू नीमन दामाद चाहत रहे, केहू सुशील पतोह चाहत रहे। केतना लोग के विचार रहे कि जातो ना लांघे के पड़े आ घर वर बढ़िया मिल जाव।

शर्मा जी बारी-बारी से लोग के बोलावस। कुछ लोग चल गइल त हमरा मौका मिलल। इशारा करके उ हमरा के सामने के कुर्सी पर बइठले। देखे-सुने में लम्बा-चौड़ा आ गोर रहले। माथा पर लाल टीका रहे। आंख में तेज रहे। कमरा में पूरबारी देवाल पर दुर्गा जी आ राम-सीता के फोटो टांगल रहे। ओन्हही ताक के आंख मूंद उ लेहले। होंठ से तनी बुदबुदइले। दू मिनट ले पलक बंद रहे। ओकरा बाद हमनी के बातचीत शुरू भइल। हमार दशा सुन के कहले कि हई फारम भरके सौ गो रूपिया जमा क दीं। रजिस्ट्रेशन पहिले जरूरी बा। हमरा लगे त विदेसियो लइका बाड़े सन, तनी जात आ धरती लांघे के पड़ी।

फारम भर के सौ रूपिया जमा क देहनी। सब सुनला के बाद उ हमरा के तीन गो लइका बतवले-एगो गोहाटी में मास्टरी करत बा, दोसरका भिलाई में इंजीनियर बा। तीसरका के हाले में सरकारी नौकरी लागल हा। ओकरा शादी खातिर त मार पड़त बा। दोसरो जात के बरतूहार लोग माटा नियर मंडराइल बा। आजकल आरक्षण के चलते अब बड़ जाति में सरकारी नौकरीवाला लइका मिलते कहां बाड़े। अब आपन च्वाइस बतावल जाव। हम मदद करके तइयार बैठल बानी।

शर्मा जी में हम साक्षात् भगवान के दर्शन कइनी। अइसने उपकारी लोग से इ धरती टिकल बिया। नाहीं त अधर्मी आ ढोंगी

लोग से त दुनिया कबे ना रसातल में चहुंप गइल रहित। हमार दशा आरत के चित रहे ना चेतू जइसन रहे। अब त अइसन लागल कि हमार निर्मला एही साल के लगन में मांड़ों के पीढ़ा पर बइठ जइहें।

शर्मा जी के साथे सरकारी नौकरीवाला लड़िका के घरे जाये के बात तय भइल। अगिला हफ्ता हमनी का ट्रेन से मुजफ्फर चहुंपनी सन। सवेरे के सात बजल रहे। शर्मा जी के खातिरदारी में हम कवनो कोताही ना कइनी। रेलभाड़ा, टेम्पो, रिक्शा से लेके जलखई, भोजन, सूर्ती पान के सगरे खर्चा हम उठवनी। खुश होके उ बीच-बीच मे कहस-भगवान चहिहें त इ लइका रउआ मिल जाई। राउर बिरादरी में इ हीरा बा।

मंगल के दिन रहे। हम मने मन महाबली हनुमान जी के गोहरवनी-जय जय जय हनुमान गोंसाई, किरिपा करो गुरूदेव की नाई। लइका के दुआर पर चहुंपते नौकर आके अता-पता पूछलस आ लुत्ती नियर भीतर जाके खबर कइलस। मालूम भइल कि लड़िका के रेलवई में टिकट कलक्टर खातिर चुनाव हो गइल बा। लड़िका के बाबू जी रजिस्ट्री कचहरी में कातिब बाड़े। बातचीत में कुशल। शर्मा जी उनकरा के बहुत बन्हले-छनले मगर उ आवंक में ना आवस। रह-रहके छटक जास। साफ-साफ पते ना चलत रहे कि उ दहेज केतना चाहत बाड़े। दुनिया भर के लोग के उदाहरण देदे के हमनी के मगज खराब कर देहले। खन भगवान के कृपा इयाद करस त खन में आज के दुनिया देखस। अगिला महीना लड़िका के बड़ भाई बंगाल से आवे वाला रहले। शादी उनकरा अइले पर फाइनल होई। ओ पार्टी के पास दउड़त-दउड़त पांच-छ महीना बीत गइल।

ओही मुहल्ला के एगो बुजुर्ग बतवले-अपने सभन कवना भरम में बानी। एह तीसी तेल नइखे ए बाबू। दउड़-दउड़ के आपन टाइम आ रूपिया-पइसा जियान करत बानी। लड़िका के बियाह तऽ उनकरे बड़की पतोह अपना नइहर के पहुनाई में तय करा देले बिया। बाप बेटिहा के बोला के आपन लाज तोपत बाड़े। हमार बात के गांठ बान्ह लीं, ए घरे राउर बेटी के पउरा ना पड़ी।

उनकर बात सुनते हम पहाड़ पर से गिरनी। एने घर में शकुन्तला अपना बेटी के बियाह के गीत गावत रहली। बेटी निर्मला भी उदास हो गइली। शर्मा जी जब सुनले त हमरे के समझावे लगले। सब हमार करम के फेर रहे। दुनिया के जियादातर लोग के चाल शतरंज के पियादा नियर होला।

घरे लउटला पर अइसन बुझाइल जे जवन दीया हमरा घर-ओसारा में लहक के अंजोर क देहले रहे, ओकरा के आन्हीं के एगो झोंका आके बुता दिहलस। खिलल-फुलाइल टहनी के केहू मरोड़ के तूर देहल। घर में हफ्तन सभे गुमसुम बनल रह गइल।

बेटी के शादी तय करे में ऐतना पापड़ बेले के पड़ी इ हमरा कहां मालूम रहे। उहो साल खाली गइल। एगो ज्योतिषी जी से भेंट भइल त उ हमरा के राय देहले कि मंगर के दिने बारह गो कांच नरियर पुरइन के पत्ता पर पान-कसैली के साथे ध के कवनो नदी-पोखरा में बहा दीं। भगवान चाहिहें त छवे महीना में लगन चरचरा जाई।

गिरल मन में फेन से उत्साह उठल। कातिक के अंजोरिया में बारह गो नरियर हम पोखरा में बहा दीहनी। ममहर गइनी त ममेरा भाई हमरा अंधविश्वास पर हंसले-तू हूं कवना ज्योतिषी के फरा में पड़ गइलऽ पुरूषार्थ करऽ। लड़का ढूंढत-खोजत रहऽ। एक दिन बियाह त होखबे करी। पोखरा में नरियर दहववला से शादी ना तय होई। इ ओझा-गुनी आ सोखा बाबा के फेरा में ना पड़े के।

बात सांचे रहे। आदमी के अपने बाहुबल आ बुद्धि पर भरोसा करेके चाहीं। फैक्ट्रिये में एगो बुजुर्ग मिल गइले। तीन गाड़ी ऊंख लेके कंटा पर तउलावे आइल रहले। हमरा के देख के उदासी के कारण पूछले- कौनो समस्या बा का, कंटा बाबू? हमरा समस्या सुनते कहले- रउआ चिन्ता मत करीं। हमरा देखे में एगो लड़िका बा। घर-दुआर आ खेती बारी से ठीक बा।

- लड़िका का करत बा? - हम पूछनी।

- हमरा जाने से हाले में एगो कंपनी में सुपरवाइजर के पोस्ट पर बहाल भइल ह। तनख्वाह कम नइखे। रूपिया झोरी भर के आवेला। आगे अउरी तरक्की करीं। ओकरे खातिर रउआ कोशिश में लागीं। अगिला शनिचर के हम फेन ऊंख लेके आइब। रउआ तइयार रहेब। बेटहा के घरे चलल जाई।

केहूं ते शुक बीतल। रात में नीमन से ऊंघी ना आइल। रह-रह के लागे कि बेटहा हमरा निहोरा सुन लेले बाड़े आ कहऽ तारे कि मथुरा बाबू, रउआ अपना घरे लउटीं। शादी के तइयारी में लागी। हम धधइले घरे आके शुभ समाचार शकुन्तला के सुनवनी ह। तले शकुन्तला हमार कान्हा ध के झकझोरत बाड़ी- का बात ह जी? कवना सपना में पड़ल बानी? बेर-बेर हमरे नाम पुकारत बानी?

सपना के बेहोशी टूट गइल। अब भोर होखे वाला रहे। चुचुहिया के बोली एक हाली सुनाई पड़ल रहे। मगर मस्जिद के लगे हनीफ मियां के मुर्गा अभी बांग ना देले रहे। ठीक चार बजे बांग देला। अब का अंघी आई। आसमान फरछिन होखे लागल। आजे त बेटहा के घरे जाएके बा।

नहा-धो के तइयार भइनी। पराठा-भुजिया रेडी रहे। शकुन्तलों शायद रात में ठीक से ना सूतली। हम अपना जूता के फीता बान्हत रहनी तले उ चंउकली- आहिबाल, दू मिनट रउआ रुकी। एगो जरूरी बात बिसर गइल बा। यात्रा पर जाए के टाइम दही-चीनी जरूर खा लेबे के चाहीं। कटोरी में दही-चीनी ले अइली। जीभ पर तनी डाल लेहनी। भगवान के स्मरण करके डेग बढ़वनी।

पूरूब में किरिन अभी ना फूटल रहे तबो गांव के कुछ लोग जाग गइल रहे। माल-गोरू के सानी-पानी देबे के तइयारी होत

रहे। इ भोर के बेरा केतना सुन्दर लागेला। आसमान-धरती के चुप्पी, उदास अन्हरिया के जोन्ही, आ गते-गत संवरात पूरब दिशा। सांच पूछी त दिनरात के पूरा चौबीस घंटा में भोर खानी खूबसूरती कबोना लउकेला। आदमी से लेके जीव-जन्तु, पेड़-पौधा सभे शायद भोरे के पेड़ा ताकत रहेला। हर भोर एगो नया जिनिगी ल`के आवेले। हवा में सुगंध भरल रहेला। सउंसे शरीर में फूर्ति बनल रहेला। इ भोर धरती के केतना उपकार करेली। घर से चलते हमरा हृदय में बइठल आशा क इ भोर भी स्वागत कइसल। भीतर के उत्साह आसमान के रोशनी खानी बढ़त चलल जात रहे। अइसन लागत रहे कि हमरा जिनिगी में आज अइसन मुहुर्त कबो ना आइल रहे। हमार लालसा आज जरूरे पूरा होई।

इ धरती, आसमान, बाग-बगइचा, देवी-स्थान सभे हमरा पर प्रसन्न बा। कण-कण से आवाज उठत बा-मथुरा प्रसाद, आज ताहार मुराद पूरा होई। बेटी के बियाह खातिर तू कम ना दउड़ल ऽ। आज के दउड़ल बांव ना जाई।

दही-चीनी के कटोरी शकुन्तला जब आगे रख के हमरा ओर तकली त उनकरा आंख के ज्योति में अपार आशा भरल रहे। जइसे उनकर रोवां-रोवां हमरा यात्रा पर आपन आसीरवाद लुटावत रहे- काली माई रउआ के बनवले राखत। हमरा सोहाग में एतना बल बा कि रउरा राह में कवनो विघिन ना आई। कटोरी के दही-चीनी के रउआ खाली दहिए-चीनी मत बूझेब। इ हमरा अंतरात्मा के उठल मंगल कामना ह। जवन दुख आ चिंता से आज रउआ घेराइल बानी ओकरा से हमूं कहां बाहर बानी। हर दुख-सुख में पति-पत्नी के आधा-आधा हिस्सा होला। राउरे हँसी में हमार हँसी लुकाइल बा, राउरे लोर में हमरो वेदना बइठल बा। जाईं, आज सांझ के लउट के जब रउआ दुअरा के चौखट पर चहुंपब त हंसते पुकारब-शकुन्ता, कहां बाडू? हम आ गइनी। निर्मला बेटी के बियाह तय हो गइल। अब गीत-गान शुरू करऽ।

बियाह के गीत सुने खातिर एह घर के देवाल, ताखा ओरी, धरन, जंगला, अंगना-दुआर भीतर-भीतर पियासल बा। हमरा त इयादे नइखे जे कवनो शादी में एह अंगना में माड़ो छवाइल होखे। एही अंगना से हमार बियाह भइल।

आधा किलोमीटर पर रेलवे टीसन रहे। रह-रह के मन कांप जाव, रास्ता-पेंड़ा में केहू टोक मत देव। यात्रा पर निकलल आदमी के टोकल शुभ ना होला। इहे सोच के हम गांव के पूरबारी रास्ता छोड़ दीहनी। भोरही से बाथान में बइठल मंगरू तेली केहू के देखते टोक देले। उनका तनिको दनाई ना ह। इ ना कि चुपचाप जाये दीं। रास्ते में उदिया से गुदिया पूछे लागे ले उनकरा हर बतिये के बयखरा मरले रहेला। उनकरा अइसन करजीभा संउसे गांव में केहू नइखे। जेकरा के टोकले ओकर काम बिगड़ल। बेटो-पतोह से ना पटे ला। लतिया के बाथान धरा देले बाड़े सन। अगर हमरा के देख लेहले त बिना पूछले ना रहिहें- का हो मथुरा बाबू, एतना भोरे, केने ?

उनकरा से बच के रेलवे टीसन चहुंपनी। गांव के एक दू आदमी मिलबो कइल त खाली राम-राम भइल। तीन टीसन बाद राघो जी के साथ ले के हमनी के लड़िका के घरे चहुंपनी सन।

अब का बताईं। जवन बात के हम पहाड़ नियर कठिन मनले रहनी उ रूई के फाहा खानी मोलायम किलल। लड़िका के बाप बड़ा भले-मानुस रहले। राघो बाबू हमरा बारे में सब कुछ बता देले रहले। लड़िका के बाप कहले- अगर लड़की देखे-सुने में ठीक बाड़ी त हमरा बेटा के बियाह करे में कवनो एतराज नइखे। तिलक-दहेज कमो मिली त चली। बाकिर लड़की दब होई त गाड़ी एको डेग ना टकसी।

अगिला हफ्ता हम निर्मला के देखा दिहनीं। सभे पसन्द कइल। तिलक-शादी के दिन रोपा गइल। फागुन के अंजोर पख के सतमी तिथि के बारात आवे वाला रहे। शकुन्तला के गोड़ धरती पर ना पड़त रहे। बेटी के बियाह के देबे खातिर ना मालूम उ केतना-केतना चीज पहिलही से जोगा के रखले रहली। रोजे रात के खइला-पियला के बाद बियाह के गीत गवाये लागल। दखिन टोला के बिटिया सन के एगो झुंड आइल आ झूमर गीत से दू बजे रात ले हउंजार होत रह गइल। ढोलक पर गीत रोजे होखे लागल।

दुअरा पर हमरो फुर्सत कहां रहे। मीरपुर के जे मनगर आ मददगार रहे उ लोग दस-दस बजे रात ले लगे बइठल बारात के इंतजाम, स्वागत-सत्कार पर विचार करे। फैक्ट्री के भी साथी संघाती आवे लोग। क्रशिंग सीजन में मैनेजर साहेब से बड़ा कह सुनके छुट्टी बढ़वनी।

सब त नीमने लागत रहे बाकिर जब शादी-बियाह के खर्चा पर सोचनी त होशे उड़ गइल। गोड़ लमहर पसार देले रहनी आ चदरा छोट रहे। अब का होखो। तिलक चढ़ावे के पहिले कुछ रुपिया के इंतजाम जरूरी रहे। शकुन्तला अपना बड़का भइया के लगे खबर पेठवली कि एह मोका पर ना ज्यादे त चालीस-पचास हजार रूपया से अपना भगिनी के बियाह में मदद कर देस। जुगाड़ बइठते उनकर पइसा लउटा दीहल जाई। हम सूदो पर कर्जा लेबे के तइयार बानी।

हफ्ता भर में उनकर भइया के जवाब आ गइल। इ बड़ी खुशी के बात बा जे भगिनी के बियाह तय हो गइल। मगर हम आपन मजबूरी के का कहीं। हमरो बेटी के बियाह तय हो चुकल बा। बेटहा टेंटियाह मिल गइल बा। अंगद के पांव नियर शर्त रोप देले बा कि तिलक के पहिले तीन लाख रुपिया दुअरा पर चहुंपा जाईं तब शादी के कार्ड छपवाई। आजकल हम एही ताना-बुना में लागल बानी। खाली रहती त चालीस-पचास हजार के इंतजाम कवनो बड़का बात ना रहल ह।

चिट्ठी बांचते हमरा मुह से निकलल- मदद करे खातिर बड़का करेजा चाहीं। मन ना होला त दस गो बहाना सूझेला। अपना

सब सारन के हम जानत बानी। औकात से अधिका उगिल देबे में का लागल बा।

हमार बात शकुन्तला के कान में पड़ गइल। ढाल-तेरूवार लेके ठाढ़ हो गइली। बोललीं- हमरा भाई लोग पर रउआ गलत धारना बना ले ले बानी। आपन गर्दनो काट के उ लोग रउआ आगे रख दी तबो रउआ विश्वास ना होई बड़का भइया जब खुदे फिचकाल में पड़ल बाड़े त दोसरा के मदद कइसे करिहें। चालीस हजार उनकरा खातिर कवनो बड़का बात ना रहल ह। बेचारू मजबूर बाड़े! ''रहे दऽ। उ केतना मजबूर बाड़े, हमरा मालूम बा। मेहरारू हरिहर झंडी ना हिलवले होइहें, एही से उनका बहाना खोजे के पड़ल।''

ए बात पर शकुन्तला तनी तमतमइली- रउए त एगो लाल बुझक्कड़ बानी ए दुनिया में। बिना बात के हमरा भाभी के बदनाम कइले रहिले।

-हंसुआ केतनो भोथर होई त उ अपने ओर धींची। तू अपना नइहर के बदनामी सुने के तइयार ना होलू। नइहर के लोग कह दी कि गंगा जी के पानी आग नियर दहकत बा त तू कहबू- ठीके में, पानी छुअते हमरा हाथ जर गइल ह।

- अच्छा चुप रहीं/ ढेर परितोख देला के काम नइखे। जब हमरा नइहर के कौनो बात आवेला इहां के ब्रह्मांडे गरमा जाला।

- झूठ नइखू कहत। हमार ब्रह्मांड त ओह दिने गरमा गइल जहिया ताहार बाबूजी मोटर साइकिल के जगेह दूपहिया साइकिल थमा के हाथ जोड़ लिहनीं।

शकुन्तला बनबनइली- त का करीं। राउर फर्माइश खातिर आपन घर दुआर बेच देतीं? अपने त मोटर साइकिल पर फर्र-फर्र उड़तीं आ हमार बाबूजी घरे-घरे घूम के भीख मंगती। राउर त इहे मनसा रहे। करे जात बानी नू बेटी के बियाह, पता चल जाला। अब काहे मूड़ी लटकल रहऽ ता ?

हमरा फोकचा पर नून मत दरऽ जनलू कि ना। तू हूं तऽ महतारिये हऊ, तबो काहे चैन से फोंफ काटऽ तारू? बाप के त बाहर-भीतर सभतर इज्जत जोगावे के पड़ेला। बेटी के सवाल ना रहित त एह चिलम के कवनों अंगारी से डर ना लागीत। बाकि अब का कहीं। जब ना तब तरकस से तीर निकाल के हमरा पर तान देलू।

- राउर बतिये ओइसन होला। हम का करीं।

तले पटीदारों के चाची अंगना में सीधे ढुकत चल अइली। दोसरा के घर में बिना खोंखले-खंखरले बिलाई नियर ढुक जाएके इनकर आदत ह। हमनी के बातचीत बन्द हो गइल। शकुन्तला कहली- आईं चाची जी!

पीढ़ा लीआ के आगे ध देहली। चाची उमिर में सत्तर जरूरे हेल गइल रहली बाकिर आंख के रोशनी आ कान के हाल ठीक रहे। धीमे से कहल बतियो उनकरा सुनाई पड़ जाव। एने ओने नजर दउड़ा के हमरा के देखते बोललीं- ए तू एहीजा बाड़ऽ? हम त सुनले रहनी ह कि बेटी के बियाह ठीक करे बहरा गइल बाड़ऽ।

शकुन्तला जवाब देहली- ठीके सुनले रहनी हं। इहां के बहरा से काल्हे अइनी ह।

-कुछुओ तिराइल ह कि ना? तू लोग हमरा बात पर विश्वास नइखऽ करत। केतना बेर हम कहनी कि तहरा घर पर कौनो कुछ क देले बिया। एह गांव में डाइनो कम नइखी सन। निर्मलवा के माथ पर कौनो हाथ ध देले होई। डाइन के हाथ कुछ करिए के गुजरेला। तनी ओझ-गुनी से बबुनी के देखा ल लोग।

-तब ओकर जरूरत नइखे। बियाह तय हो गइल।

- तय हो गइल ? चाची चउंकली। तू त बड़ा नीमन खबर सुनवलऽ ह मथुरा। निर्मलवा कहां बिया, लउकत नइखे।

-आवत बिया, चउका में आटा सानत बिया। - शकुन्तला कहली निर्मला आके बुढ़ियो के गोड़ छूअली।

-बइठ रे। कहां कहां छिछियालू आ तनी हमरा लगे आके ना बइठेलू।

निर्मला हंसे लाल। ओकरा मूड़ी पर हाथ धइली। फेन कलाई पकड़ के चाची गीत कढ़वली- हमरा निरमला हो बेटी, आंखि के रे पुतरिया। दिनवा हरेलू ऐ बेटी भूखी रे पियसिया- एतने में खोंखी उपट गइल। सभें हंसे लागल ।

गांवन में बूढ़े-पुरनिया लोग लोक-संस्कृति के जोगा के रखले बा। अब त पढ़ल-लिखल नवकी सन के बियाह शादी, पीड़िया, परब-त्योहार के कबनो गीत इयादे नइखे रहत। कवनो एक लाइन कढ़इबो करी त अगिला लाइन में खी-खीं क के हंसे लागी। तनकी-सा पढ़के शहर ध लेत बाड़ी सन। आपन घर-आंगन के बोली भुला जाता। ऊपर से अंग्रेजिए छंटाता। खेत-खरिहान के फसलों अब चिन्हाए से गइल। मडुआ-सांवा-कोदो के नाम त डूबिए गइल, धानो-गेहूं पहचाने में कठिनाई बा। बजरंगी के बेटी बी.ए. पास कइले बिया। गेहूं के खेत के धान बतावत रहे। शहरी पढ़ाई भी त भोजपुरिया संस्कृति के साफे ले डूबल। तबे नू आवाज उठत बा कि स्कूलो-कालेज में भोजपुरी के पढ़ायी होखो जवना से अपना भाषा के सभे के जानकारी रहो।

बाकिर हमरा निर्मला के त केतना भोजपुरी कहानी कहाउत इयाद बा। मुंह बिचका के जिन भोजपुरी बोले ले उनकरा किस्मत पर हंसी आवेला। आपन महतारी के अलगिया के मायभा के गोड़ जांतल कवनो नीमन बात ह?

गांव में खबर फइल गइल कि मथुरा प्रसाद के बेटी के बियाह तय हो गइल। अवधिया टोला में केहू कहल कि मथुरा का खा के बेटी के बियाह रोपते। उ त मिल में के साहेब लोग थोड़

बहुत चंदा दीहल ह। डायरेक्टर साहेब कहले बाड़े-एं मथुरा प्रसाद, बेटी की शादी में तुमको जिस चीज की जरूरत हो हमको कहना। हम मदद करने को तइयार है।जे अइसन अफवाह फइवले रहे ओकरा पर हमार मिजाज धनक गइल। नाम खोलला में का बा। कुशल त अइसन गरमइले कि ओही बेरा उनकरा के पकड़ के पीटे के तइयार रहले। हमहीं रोकनी- ना बाबू। अपना घरे जग ठानाइल बा। कवनो विधान में बाधा पड़ जाई त सब चउपट हो जाई। उ फैक्ट्री के आदमी है हमरा से तनी बेफैट रहेला। उ ओही दिन से हमरा पर गभुआइल रहेला जवना दिने कंटा पर तीन गाड़ी ऊंख तउला के हमरा से रसीद में दस क्विंटल वजन बढ़ा के लिखे के कहलस।

हम कहनी- अइसन बेईमानी हमरा से ना होई। तहरा गन्ना के जवन वाजिब मनी बा ओतने के रसीद मिली। हम अमानत में खयानत ना करेब।

उ हंसले- बड़ा युधिष्ठिर बनल बाड़ऽ। आपन दीन ईमान लेके कंटा पर बइठल चाटत रहऽ।

ओही दिन से उ बोलचाल छोड़ दीहले। जेने तेने हमरा खिलाफ लोग से कहत फिरेले। केन मैनेजर से कम शिकायत नइखन कइले। हम त उनका खिलाफ तनिका शीत-बसंत ना बोलनी। बाकिर दुनिया में जे दुष्ट बा ओकरा के सुधारल आसान काम ना होला। उनका आंख में रूपिया सटल रहे आ हमरा दिल में ईमान पहरा दत रहे। अपना बेटी के बियाह खातिर इ मथुरा प्रसाद जवना घड़ी चंदा के चदरा बिछइहें, ओह से पहिले धरती में धंस गइल नीमन समझिहें।

इ सब अफवाह अइसन घड़ी में फइलावल जात रहे जब हमरा घरे लगन के गीत उठत रहे। बेटा कुशल के तनिको इशारा कर देतीं त उ अपना साथी लोग के लेके ओह कुचरा के थुथुर कूंच के चल अइते। बाकिर मंगल में दंगल शोभा ना देला।

पड़ोस के इ चाचियो पूरा मंथरा हई। इनकरे कृपा पर टोला-मोहल्ला के शांति कायम रहेला। झूठ-सांच के लपटा लगा के एही गांव के तीन गो परिवार में बांट बखरा करा दीहली। कचरा-कुटाइन में इनकर मन खूब लागे ला। ऊपर से एकदम शांत लउकेली मगर हई बिरनी के खोंता। हमार आपन जग संभारे के रहे। शकुन्तला के हम पहिलही समझा देहले रहनीं- कवनो नेगचार में चाची के मत भूलइह। उनकर बोलहटा पहिले होखे के चाहीं। अगर उ संतुष्ट रहिहें त समझऽ सारा देवी देवता लोग के कृपा बनल रही। उ कवनो झाड़ फूंक के सलाह देस त उनकर बतिया मूड़ी हिला के चुपचाप सुन लीहऽ। कवनो बहस में मत पड़िह। भीतर के बड़ा खराब हीयऽ बुढ़िया। एकर खिस्सा शायद तू ना जानत होखबू। पैंतीस साल के जवानिए में अपना मरद के मुर्दघटिया भेज के इ आपन सेनुर धो लीहली। बात एतने रहे कि इनकर मरदू अपना बाप महतारी के बुढ़ारी में छोड़ के तइयार ना रहले। अपना सास के दाल में जहर मिला के पहिलहीं बैंकुठ भेज देहली। एकर उजर साड़ी देख के आ गीत सुन के भरम में मत पड़िह। एह उजर के भीतर करिया मन छिपल बा। निर्मला के मुड़ी पर जब हाथ ध इइलसीह त हमरा जियरा कांप गइल हा। हे भगवान, आगे तू ही सहायक बाड़ऽ। जवना दिन इ विधवा बनल ओही दिन से इ बुढ़िया मीरपुर विधाता बन गइल। एकरा डर से बड़ बड़ पंडित लोग के पतरा कांपेला। जोरन डालल जवना दूध के इ देख ली उ दसो दिन में ना जामी। ओह दूध दही के सड़ही के बा। आपन जग आ पत बचावे के बा त चाची खातिर पीढ़ा हमेशा तइयार रखीह।

शकुन्तला हमार बात अइसन मन में सुनली जइसे कहू भागवत कथा सुनत होखे।

चउथा कलछुल (चउथा अध्याय)

निर्मला के बियाह खुशी-खुशी बीतल। बेटी के विदा क के हमनी का जइसे गंगा नहा लेहनी सन। मूंड़ी पर के बोझा उतरल। इ बतिया हम लोगे के कहल कहत बानी। ना त आपन बेटी कहीं बोझा होली सन। निर्मला जबले लगे रहली हमनी के बड़ा सुख देहली। तनिका-सा कपार बथे त गुलरोगन के तेल ले के हमरा लगे बइठ जास-आव, माई। तोहरा के तेल लगा दीं। मना कइलो के बाद उ बिटिया काहे के मानो। माथ में तेल जांत के देह के गतर-गतर जांत देत रहे। बुझाव जे सब बेरामी भाग गइल। अइसन सेवा देख के निर्मला के बाबूजी अलगे से हमरा पर गाभी मारीं- जब निर्मला के बियाह हो जाई तब देह के जंताई के करी? आकि बेटी कुंवारे रखे के बा?

-रउआ चुप रहेब कि ना। अइसन खराब बोली मुंह से काहे कढ़ावत बानी? हमार बेटी नइहर में काहे रही? उ ससुरा में रानी बन के राज करी। हमरा बात के गेंठी बान्ह लीं-निर्मला के सेवा सुभाव से सास-ससुर एकरा के अपना माथा पर रखी लोग।

हमार मन त एगो महतारी के रहे। अपना धीया के लेके का का सोचत रहनी। जहिया शादी के दिन रोपाइल ओही दिन से हमरा आंखि से लोर बहे लागल। सोच के मन ब्याकुल हो जाव कि बेटी के विदा क के हम कइसे जीएब। लगन-चुमावन होत रहे, गांव भर के मेहरारू लोग हंसी-ठठा में चहकत रहे ओने हमार आत्मा रोअत रहे।

बोरा में से दाल निकालत रहनी त रोआई छूटत रहे। ओही छन निर्मला आ गइली- इ का, माइ! तू रोअत बाडू? काहे?

हम निर्मला के अंकवारी में भर के अउर रोए लगनी। निर्मला हमार करेजा रहली। देह हमार रहे प्रान निर्मला रहली।

जवान लड़की के इ सब बात बूझे में देरी ना लागल। उहो हमरा के कचकचा के ध लेहलस। भोकार निकल गइल- माई, हमार बियाह मत करऽ। तहरा के छोड़ के ना जाएब।

हमार हिचकी बन्हा-बन्हा के टूट जात रहे। हम समझवनी- अइसन बात मत बोलऽ बेटी। अभी हमनी का जिन्दा बानी सन। तहरा के कुंवार देख के हमनी पर कइसन बीती।

अंगना में हल्ला मचल कि पंडित जी आ गइनी। लड़की के बुलावत बानी। चउका पर बइठ के नेगचार होई। निर्मला के लेके हम वेदी के लगे चल गइनी।

हमरा देखे एह अंगना में इ पहिलका मांड़ों छावाइल रहे। माड़ों छवात रहे त मन खुशी से झूमत रहे। भगवान अइसन शुभ दिन देखवले।

बारात सजधज के आइल। कई जानी हमरा से कह गइली- चाची, निर्मला के दुल्हा बड़ा सुन्दर बाड़े। दुलहा त दुलहे बाड़े।

ओ लोग के बात सुनके हमरा हृदया से फूल झरे लागल।

रात के दू बजे कन्यादान के रश्म शुरू भइल। हमनी का मरदे-मेहरारू चउका पर बइठल रहनी सन। ओने निर्मला आ उनकर दुल्हा बइठलह रहले। माड़ों के चारो ओर लोग घेरले रहे। तनिकी-सा पलक मिलल त हम कहनी- मेहमान, हमरा बेटी से ठीक से राखब।

हमरा फेन रोआई छूटे लागल। केहूं तरे मन के धीरज धरवनी। मेहमान बोलले- अम्मा, अपने चिंता मत करीं। राउर बेटी के कवनो दुःख ना होई। जब मन उदास होखे तबे बोला लेब।

मेहमान त ठीके कहले। बाकिर निर्मला त उनकर बेकत भइली। बाप-महतारी के घर त आजे तक ले उनकर घर रहल ह। उनकरा विदा भइला के बाद ए घर के कन-कन हमरा से पूछी-निर्मला कहां गइली? एही अंगना के खटोली पर लेट के उ दूध पियली, मांओ बन के चलली, कनिया-गुड़िया खेलली। केतना-केतना बात इयाद आई। सबके साक्षी त हमनीं बानी।

मांड़ों के आस पास खड़ा लोग में तनी हलचल भइल। इहां का हमरा से धीरे से कहनी-फैक्ट्री के मनेजरो साहेब आ गइले। उनकरा साथे अउरी लोग बा। कन्यादान देखे आइल बा लोग। मांड़ों में बइठले बइठल इहां का मनेजर साहेब के प्रणाम कइनी। उ एक ओर खड़ा होके मुस्कुरात रहले आ कन्यादान के रश्म बड़ी मन से देखत रहले।

आसमान फरछिन होत रहे तले विदाई के तइयारी होखे लागल। बक्सा-पेटी, झोरा-झांपी सब सजाए लागल। हर बतिए पर हमरा रोआई छूटे लागे। ओह अंगना के इया जी लगली समझावे- इ का करऽ तारू दुलहिन। इ रोये के बेरा ह? हंसी खुशी से बेटी के विदा करऽ। आसीरबाद द कि उ सुख से ससुरा में रहो। तहार रोअल देख के निर्मलवो घबरा जाई। आज उ अपना असली घरे जा रहल बिया। एक दिन त हमहूं-तूहूं नइहर छोड़ के आ गइनी सन। बाप-महतारी के घर छोड़त बेरी बुझाला जे प्रान निकल जाई। बाद में उहे पिया के घर नीमन लागे लागेला।

दुअरा पर पंडित हजाम हल्ला मचवले रहे लोग-बिदाई के मुहूर्त निकलल जात बा। आधा घंटा में भद्रा चढ़ा जाई। कन्या के जल्दी बाहर निकालऽ लोग। रोना-पीटना अउरी बढ़ गइल। सभके आंख में लोर भरल रहे। हमनी के मोहमाया त्याग के निर्मला अपना सुसुराल गइली।

केतना दिन ले घर भांय-भांय करत रह गइल। सभतर उदसी छवले रहे। केहू के गइला से केतना खालीपन गहिर हो जाला। रह-रह के बुझाव जे कौनो कोना से निर्मला हमरा के पुकारत बाड़ी- कहां बाड़े रे माई?

हम भकुआ के दुआर के ओर ताकीं। केहू त ना रहे। देवाल भा चउखट ध के तनी लोर बाह लीं।

निर्मला के बाबूजी कहीं- मन के समझावऽ शकुन्तला। बेटी त दोसरा घर के धन होले।

निर्मला के गइले दू महीना से ऊपर बीत गइल। ओने से खबर आइल कि उनकर दुलहा उनका के साथे लेके अपना नौकरी पर बम्बई चल गइले। निर्मला के सखी सहेली हमरा लगे कबो-कबो बइठ जा सन। खाली निर्मले के चर्चा होखे। एगो कहलस-निर्मला दीदी के कइसन भाग बा जे बियाह होखते बम्बई चली गली। अब त शहर में ठाट से घूमत-फिरत होइहें। फिल्मी एक्टर त रोजे लउक जात होइए सन। इ लड़कियन के बात पर हमरो मन फुलात रहे। लइका खोजे में भले तीन साल लाग गइल त का निर्मला के घर-वर नीमन मिल गइल। आपन-आपन भाग होला। पुरोहित जी लइकांइए में ओकर लीलार देख के भखले रहले। यह कन्या किसी बड़े घर में जाएगी। उनकर बात सांच निकलल।

निर्मला बम्बई से चिट्ठी लिखली- मार्ह तू हमार चिन्ता मत करीह। एहीजा हम नीमन से बानी। डेरा अभी ओतना अच्छा नइखे मिलल। तहार पाहुन नीमन डेरा खोजे में लागल बानी। बड़ा भीड़ बा एह शहर में। सभें भागते दउड़ते देखाई पड़त बा। दू हाथ के कमरा के किराया हजार हजार रूपया बा। अपना मीरपुर नीयर एहीजा जमीन रहित त हमनी का करोड़पति बन जइती सन।

चार महीना बाद एगो अउरी चिट्टी आइल। निर्मला लिखले रहली। अभी तक नीमन डेरा ना मिलल। इहां का कहीं कि इ बम्बई शहर ह। एहीजा हर कमवे में लाइन लगावे के पड़ेला। बसो में कंडक्टर ढेर मुसाफिर लोग के ना चढ़े देला। एक दिन त हमहीं छूट गइल रहनी। इहां का जइसे चढ़नी कि बस खुल गइल। हम चिल्लाते रह गइनी। केहू ना सुनल। येह शहर में केहू-केहू के सुनेवाला नइखे। इहां का अगिला स्टाप पर उतर के हमरा लगे आ गइनी। लोग के अइसन भीड़ त हम गांव के मेलों में ना देखले रहनी ह। एक दिन दूरे से बुझाइल कि बाबूजी खानी केहू हमरे ओर आ

रहल बा। उहे रंग, उहे कदकाठी, उहे चाल। अपना मन के खुशी के का कहीं। हे भगवान, बाबूजी बिना बतवले बम्बई कइसे आ गइनीं। चिट्ठी भ फोनो से कौनो खबर ना देहनी। हो सकेला अपना दामाद जी के खबर क देले होखीं। बाकिर इहों का कुछू ना बतवनी। भुला गइल होखब। कबो फुर्सत होखे तब नू घर के बात इयाद रहो। एहीजा सभे त धंधे में लागल बा। हंसे-मुस्कुराए तक के संवठा नइखे।

उ आदमी लगे आ गइल त हमार भरम टूटल।

रात में सूते के टाइम में हम तहरा मेहमान से कहनीं- आज त हम भारी भरम में पड़ गइल रहनी हं। हमार बात सुनते इहां का हंसे लगनी। ओकरा बाद बेर-बेर हंसते रह गइनी। उहां के ओर हम ध्यान से देखनी, चेहरा के रंग तनी बदल गइल रहे आ मुंह से बदबू आवत रहे। मन सनाका खा गइल- अरे, बुझाता जे इहां के दारू पी के आइल बानी। पूछला पर डांट देहनी। लगनी अनाप-शनाप बके- मेरा कोई साला कुछ बिगाड़ नहीं सकता। निर्मला। ज्यादे शक-शुबहा में ना पड़े के।

उहां के आफिस जाए के टाइम हो गइल बा। चूल्हा पर तरकारी चढ़वले बानी। जरे के डर बा। फेन जब टाइम मिली त तहरा लगे लिखेब। इ बात बाबूजी से मत बतइहऽ, ना त उहां का भारी दुख होई। हमरा करम में जे रहल से मिलल।

निर्मला के चिट्ठी पढ़ के हम फिकिर में पड़ गइनी। निर्मलवो त कम ना हीय। कहीं एकरा के कंउचावे खातिर मेहमान नकल त ना कइले। मरद लोग नाटक-नकल करे में आगे रहेला। हमरो मरद त उहे भेंटा गइले।

कबो-कबो झूठ के गतान अइसन बांधिले जइसे सब सांचे होखे। दुअरा पर हनुमान जी साक्षात प्रकट भइल बाड़े, कहके बुढ़ियो इया के केतना परेशान कइले रहनी। झूठ के पंजियावे में मरद लोग कम ना ह।

कविता

रउवा देखले बानी ?

❑ **कृष्णदेव 'घायल'**

रोंघट मइल-
ठेहुना ले धोती,
चिचुकल चाम, आ-
घमिआइल देंह से
तर-तर चुवत पसेना
दू घोंट रस
मुठ्ठी भर चबेना-
रउवा देखलेबानी ?
लटियाइल बार-
निहुरल करिहऑय
एक हाथे ठेघुनी
एक हाथे कटोरी
आँख से साफ सूझे ना
केहु दे, केहु दे ना
रउवा देखले बानी ?

सिकागो का नकसा पर
असमान छुवत घर
भारतीय संस्कृति के
रक्षक मतारी बाप
कानवेण्ट के लइका के
मुँह में ठेलत
मिसिरी मिलल छेना
दिहले पर अउर ले ना
रउवा देखले बानी ?

बस स्टेसन का भवन में
पुलिस चउकी
ओकरा समने
देसी सराब के दोकान,
डगरात मनई जइसे गेना
फाटल थइली, बोतल के पेना
रउवा देखले बानी ?
काहें नइखी बोतल आ कि नइखीं सुनत ?
रउवा मुँह हऽ ? कान हऽ ?-
का इहे हमन का आजाद हिन्दुस्तान हऽ।।

सामयिक व्यंग -

"का लिखीं ? "

❑ राजगुप्त

आज-काल के चलन देख के मन खट्ट हो गइल बा। अपना इज्जत मरजाद से केहु डेरात नइखे। सोने क चिड़िया वाला देश में टेरीकाट दूध बेचाता। शादी-बिआह के अजबे रेवाज देखि पूर्वजन के मन पियराता। नेतन के करनी से मन पितराता। जइसे दूध में फिटकिरी पड़ि गइल होखे, अइसन उदंड से मनवे सेराता। अइसना में एगो पत्रिका के सम्पादक के सनेसा मिलल ह कि विशेषांक खातिर कुछ लिख के भेंजी। बड़ा फेरा में पड़ली। जहाँ गोल के गोल भकोले होखे, ओइजा का लिखल जा सकेला।

"आन्हीं आवे धूरि उड़े ना
बरखा हो केहू भीजे ना
आगि पर अदहन खउलत पानी
तबहू चाउर सीझे ना।"

पूजनीय राम चरित मानस आ श्रीमत् भागवत् गीता के उपदेश से चरित्र सुधार ना हो पावल, त हमनी के लिखला से का उखरे के बा? बाकिर जब अखबार लिखत बा कि एक सौ चौरासी करोड़ रूपया खर्च कइला के बाद इलाहाबाद से गाजीपुर तकले गंगा साफ ना हो पवली त अउरी जानि के का होई? देश में तम्बाकू के मद से आय लगभग छव हजार करोड़ होला, जबकि ओकरा दुष्प्रभाव पर सताइस हजार करोड़ सरकार खर्च करतिया। अइसना में लिखल जा सकेला कि पढुआ प्रदेश के निरक्षर मुख्यमंत्री बनि जाब। जे परिवार नियोजन के अंगूठा देखावत होखे। का इ लिखल जा सकेला कि डियूटी पर तैनात सिपाही के बनूखि चोरी चलि जा। का इहो लिखल जा सकेला कि कर्मचारियन के हड़ताल से देस के केतना नोकसान होला? ओकरा बादो सरकार ओ लोगन से सुलहा क लेतिया। बूझे के बात बा। एक दिन के बैंक हड़ताल में करोड़ों के नोकसान होला। ई जान के अचरज होता कि देस में सरकारी कर्मचारियन के तीन सौ पैंसठ दिन के काम-काज में दू सौ एक्क दिन के छुटटी लेबे के अधिकार बा। अइसन बेवस्था कवनो देश में नइखे। एक सौ दस बेरी सम्मन गइला के बादो केहू कचहरी में हाजिर ना होखे। अउरी ना त सजायापता मुजरिम संसद ध लेई। देश के केतना नीक नेयाय बा? केतना बढ़िया कानून बा?

सब जानता एक आदमी के मुअला पर पाकिस्तान के पूर्व प्रधान मंत्री जुल्फीकार अली भुट्टो के फांसी दे दीहल गइल। जबकि कम्बोडिया के क्रूरतम तानाशाह पोलपोट बीस लाख लोगन के मोत के घाट उतरला के बादो अपना मउअति से मुअल। बिहार के भाजपाध्यक्ष ओनइस सौ तिरासी से फरारी हालत में बाड़े बाकिर पुलिस अभिरक्षा में कुल्हि चुनाव लड़ताड़े। गैर जमानती वारन्ट के बादो बुखारी आ जयप्रदा गिरफ्तार ना हो पवले लोग। अपना उत्तर प्रदेष के बीस लाख मुकदमा लम्बित बा, एक सौ आठ उद्योग बन्द हो गइल। सरकारी बेवस्था के बारे में का लिखल जा सकेला कि तेइस वर्ष बादों चकबन्दी पूरा ना हो पावल। का लिखल जा सकेला कि अपना जनपद के पॉच सौ बारह किलोमीटर के नहरन के जाल के बादो धान के बेहन डाले के पानी नइखे। आश्चर्य त तब होता, जब प्रदेश सरकार करोड़ों के धनराशि सूखा राहत में बांटतिया। ओकरा बादों तीन करोड़ किसान कर्जदार बाड़े। बिहंसे वाली बात त ई बा कि सरकार से अवमुक्त दू सौ पचास करोड़ रूपया सिंचाई विभाग के ना खर्च पवला के कारण उल्टे लवटा देवे के पड़ल। अपने जिला में बीस करोड़ रूपया के खाद्यान्न घोटाला के आंकड़ा बा। अइसना में कन्या विद्या धन के बीस-बीस हजार करोड़ रूपया के चेक के का हालि होई? भगवान मालिक बाड़ें ?

आतंकवाद में तबाही मचावे वाला लोग सरकार से सुलहा क के क्षेत्रीय पार्टी बना लिहले। ओमे से केतना लोग लालबत्ती लगा के घूमे लगले। इ सब जनला के बादो।

आतंकवाद में तबाही मचावे वाला लोग सरकार से सुलहा क के क्षेत्रीय पार्टी बना लिहले। ओमे से केतना लोग लालबत्ती लगा के घूमे लगले। ई सब जनला के बादो जनता के मुंह बन्द बा। जैसे असली मतदान के प्रतिशत कम हो गइल। का इहे कुल्हि लिखीं कि किरायेदार के मुअला पर ओकर लड़िका, बे लिखा-पढ़ी के काबिज रहि सकेला, बाकिर मकान मालिक के मुअला पर जजादि पर नांव चढ़वावे खातिर मकान मालिक के लड़िका के कचहरी आ नगरपालिका दउड़त-दउड़त अगिला के जूता खिआ जाई। इ करिया कानून लिखि के का होई कि साले साल सभकर तनखाह बढ़ता, बाकिर मकान के किराया ना बढ़ि सकेला। बीस रूपया दूकान के किराया देबे वाला किरायेदार दू-दू सई रूपया बिजली आ टेलीफोन के खाली एक बित्ता के मीटर के भाड़ा दे ताड़े। इन्कम टेक्स, सेलटेक्स के बाते जनि करीं।

आजु बरिसन से लिखाता कि राजकीय विद्यालय में अंग्रेजी आ साइंस के मास्टर नइखे। तब्बो फीस पूरा असुलाता। बे पढ़ाई इन्तहान लिया जाता। बे पढ़ले लड़िका कइसे पास हो जा ताड़े? एकरा बारे में नकल करावे वाला गार्जियन या ट्यूशन पढ़े वाला पढुवन के बारे में का लिखल जा सकेला? का इ लिखल जा सकेला कि गैर परीक्षा केन्द्र पर चालीस प्रतिशत आ स्वयं परीक्षा केन्द्र पर अस्सीर प्रतिशत छात्र पास हो जा ताड़े? इ लिखि के का होई क छव महीना में बी०ए० के रिजल्ट ना देवे वाली सरकार महिने दिन में चुनाव करा ले तिया। अपराधियन के कुर्सी धरा दे तिया। कइसे लिखल जा सकेला कि पंच कुर्सी पा के किसमिस से छोहाड़ा हो जाता। भरत अस भाई के उदाहरण वाला देश में भाई-भाई आपुसे में जनमरउवल क लेता।

अलबत्त जहाँ जिन्दाबाद के नारा से, जेल भरो आन्दोलन

से सड़क जाम, आमरण अनशन, जुलूस, नगर बन्द, हड़ताल के हल्ला से नकदम भइल रहता। ओइजा जबरन के भीड़ में मानवाधिाकार लुका जाता। धूरि-धुआँ से आँखि धुधुराह हो जाता। सांसि लेबे खातिर (फिल्टर मास्क) नाके अन्हवट लगावता। अइसना में केकरा दोस के बारे में लिखल जा सकेला कि के प्रदूषण फइलावता?

जब देश के प्रधानमंत्री स्वीकारत होखे कि दिल्ली से जवन एक रूपया जाता, उ चलत-चलत खिया के गांव में चोहंपत के बेरा पैचीसे पैसा रहि जाता। सांच के आंच कइसन? गाड़ी चली त तेल जरी। ठीका पर सड़क मानक रूप से कइसे बनी? अइसना में कवना कानून के बाति कइल जाव? प्रधानमंत्री के स्वीकारला के बाद प्रशासनिक नियम के बारे में अब का लिखहीं के बाँचल बा ?

रोपलीं गुलाब, उगि गइल बबूल,
अइसे अनेर के कइसे करीं कबूल ?

बुद्ध आ गाँधी के देश में लाज ना लागी कि भवही के साथ भसुर एक्के रेक्सा पर सटि सटि के बइठता। हंसि-हंसि बतियावता। कइसे बतावल जाव कि उ कइसन मजा मारता। का लाज ना लागी जी कि हरदी लागल लड़िकी अपना सोरह सिंगार के सामान आ जयमाल के साड़ी, लहंगा कीने खातिर खुदे घरसे बहरिया जा ताड़ी। जइसे नीम चढ़ल करइली। अमिताभ के अगुवानी में विश्वविद्यालय के लड़िकी छवरि में आपन दुपट्टा बिछा दे ताड़ी , मइल दुपट्टा होखे त होखे, हीरो के गोड़ भुइया ना पड़े के चाही। उल्टा चलन देखि मन शरम से झुकि जाता कि सचिन के टोपी आँखि के छाँह ना दे के गरदन के घाम से बचाई। बड़ा मजा आवता कि दुपट्टा गर में लगवल जाता। ड्रेस कोड जिन्दाबाद।

संसद के एक घण्टा के कार्यवाही पर चार लाख छब्बीस हजार रूपया के खर्च जनता के उठावे के पड़ेला। खेत खाव गदहा मार खाय जोलहा। बोफोर्स तोप घोटाला आ बेस्ट बेकरी काण्ड के दोसिहा, बेदाग छूटि गइले। चार सौ करोड़ रूपया के शाख पत्र घोटाला में एगो मुख्यमंत्री आरोपी बाड़े। ओकरा बादो उ संसद में ललकारताड़े। साफ छवि वाला शेषन के सरकार दूधि की माछि के तरे उपेक्षित क दिहलसि। जिन अरबों खरचा कइला के बाद चुनाव पहिचान पत्र ना बनवा पवले। गुर से दोस्ती गुलगुला से परहेज। अइसन कुल्हि समाचार पढ़ि-पढ़ि के एगो शरीफ नागरिक क बेर मुअता एकर भरपाई के करी? का समाचार चैनल एकर जवाब दे सकेला ?

महिनवन से अखबार के सुर्खियन में बनल रहे वाला सौरभ के पढ़ाई के बड़ाई स्लेट पर से अइसे मेटि गइल जइसे हवा में कपूर रखा गइल होखे। जैन वाला काण्ड मे केहु दोसिहा ना लउकल ना जज के कवनो घोटाला लउकल। जाने के बाति बा देश में अठारहगो विश्वविद्यालय, पाँच सौ मेडिकल कालेज आजुवो फर्जी ढंग से चलताड़े। डिग्री के बाति छोड़ीं इम्तहान के पहिलहीं पर्चा आउट हो जाता। एतना सांच त लिखल जा सकेला कि सरकारी प्रतिष्ठान पर बिजली विभाग के चउदह हजार करोड़ रूपया बाकी बा। नेशनल टेक्सटाइल कारपोरेशन हर साल चार सौ पचास करोड़ के घाटा में चलेला। तीन सौ करोड़ से अधिका सहायता के बादो धारीवाल अइसन नामी-गिरामी प्रदेश के मिल बन्द करे के पड़ल। भारत उदय पर पैसठ करोड़ से अधिका विज्ञापन खर्च कइला के बादो फील गुड ना हो पावल।

हम लिखि के का करबि कि अपने लड़िका अपने बाप के कहला में नइखें। बरिजला के बादो पुड़िया के मसाला भूजा अस फाँकता। परथन में पनरह सौ के दवाई हफ्तावारी चबाता। बियाज में परहेजी खाना खाता। बाप छव बजे लड़िका नव बजे उठि क नहाता। बड़ा दिन के खुशी छोटहन रात में मनावता। एकतीस दिसम्बर आ पहिली जनवरी के धूम-धाम जनावता। सिगरेट पीयल स्वास्थ्य खातिर हानिकारक बा। बैधानिक चेतावनी के बादों ओकर बिक्री बन्द नइखे हो पावत। तैतालिस करोड़ के लागत से तीसरका दफे प्रदेश मे एको चर्चित मंत्री जिला के सीवरेज के उद्घाटन कइले बाड़े? देखी का होता ? नया टेकनिक में सीवरेज के प्रचलन खतम हो गइल बा। जाने के बाति बा, हरियाणा के सत्तर प्रतिशत घरन में टी०वी० बा बाकिर चालीस प्रतिशत घरन में सेफ्टी पायखाना बा। का लिखल जा सकेला कि करोड़ों रूपया खर्च कइला के बादों मिड डे मील योजना फेल हो गइल। बाकिर दू हजार चार के चुनाव में एक सौ छब्बीस करोड़ रूपया खर्च क के कांग्रेस महज एक सौ पैतालीस सीट पवलसि। विश्व में एगो अनोखा रेकार्ड बनल जब एकही दिने दिल्ली में बीस हजार बिआह भइले स। इ लिखल केतना अच्छा लागत बा कि अयोध्या के सन्तन के हाथ में तुलसी के माला जहाँ रहल चाहत रहे ओइजा बनूखी आ पिस्तौल के लाइसेन्स आ गइल बा। जय हो दीन दयाल। अयोध्या की सुरक्षा पर हर साल पचास करोड़ खर्चा होता। आडवानी जी जवन पाकिस्तान गइले कि गड़ल मुर्दा उखड़ि गइल। बुझाता जिन्ना शोध के विषय हो गइले। नीब, हरदी के पेटेन्ट के बाति हो रहल ह कि अमेरिका चाँदमामा पर जमीन बेचे लगलसि, अब ताज महल के मालिकाना हक के झगड़ा बा। जय हो भृगु बाबा। इ भृगु क्षेत्र राउर ह। रउरो बुलडोजर चलवाई। अपना शहर के रउरा बेशक खाली कराई।

कहानी-

बुढ़उती

- **प्राध्यापक ''अचल''**

रेवतीपुर प्रदेश क बड़का गांव हऽ। साठि-पैसठ हजार क एकरि आबादी ह। एहिजा बारहो महीना हरिकीर्तन, रामायन आ एक ले एक बड़ भोज क आयोजन होत रहेलन स। बाति अरतीस उनतालीस क ह। ओहिजा एगो बड़ भोज रहे, जेवना में सामिल होखे क आज्ञा अपनो पलिवार के मिललि रहे। भोज खाए बदे पलिवार जुटल। ओहिजा आदिमिन क भीड़ि देखि के ददरी क मेला झूठ लागे। एक-एक तोर दुइ-दुइ तीनि-तीनि सइ आदमी, दुवार का लमहर चाकर चउफाल में पांति लगावसु। सांझि खानी चारि बजे भोज सुरू हो गइल रहे। अपना एगो संगी का संगे छव बजे भोजन करे बदे पांति में बइठलीं। हम ओघरी १३-१४ बरिस क रहलीं। हमार संगी खुदकवलन- ''हऊ देखऽ, एगो अचरज।''

देखलीं- ''एगो जवान पहलवान चारि अदिमी का रोब मोंट झोंट रहे। ओकरा सुघर, सुडौल आ कसरतिहा सरीर के देखते रहि गइली।

संगी फेरू खुदकवलन- ''ई अदिमिया जेतना लमहर बा ओतने चाकर। देख; केतना जगहि छेंकले बा ? एक गज क छाती बा, मोटी-मोटी गंठिगरि बाहिं बाड़ी स आ अंकवारि-अंकवारि भर क जांघि बाड़ी स। एंगुर मतिन लाल देहि! बुझाता कि जो सींकि से खोदि देई त रकत बहि जाई। देहि सीसा मतिन झलकति बा। एतना बड़पाँति में ए पट्ठा क जोड़ केहू नइखे।''

हमनी का दूनो जाना का जीभि के सोहारी कचउड़ी आ दही चीनी क सवाद बुझइबे ना कइल। 'अंखियन में छवि राखिबे जोग' कहि-कहि निहरते रहि गइलीं जा। काहे कि 'ज्यों-ज्यों निहारिए नेरे हवै नयननि त्यो-त्यों खरी निकरै सी निकाई''।

आदमिन से नांव पूछलीं जा। उत्तर मिलल- ''मालबाबू।'' एही नांव पर हमनी का सन्तोख हो गइल।

हमनी का मालबाबू के उपटल जवान बूझत रहलीं जा, तले एक आदमी कहलन- ''ई बन बइठकी क देहि ह। ई हाली ओहजेवाली ना ह। एके कारीगर बसुला से माजे में छोलि-छालि के बनवले ह। कले-कले इ पट्ठा ढेर दिन क भइल। अब पट्ठा उतार बा तबो देहि अबे कसलि बा।''

भोज खइलीं जा आ मालबाबू अपना घर का ओरां चलि दिहलन आ हमनी का अपना अपना घर का ओरॉ।

सन् ६० क बाति ह। माल बाबू अपना बांड़ का डेरा पर ले, घरे गोजी लिहले चलि आवत रहलत। सांझि क बेरा रहे। अन्तर का आगम से डेरा लें घरे चोहँपे क जल्दी रहे। हाली-हाली में खाला ऊँचा चढ़त उतरल उनुकरा पसेना झरत रहे। झोलअन्हारी हो गइलि। ऊ उढुकत-ढमिलात झपटत रहलन। सीवान घूमत हमहूं घरे चलि जात रहलीं। हमहूं सकेरे घर पहुंचे बदे पाँव बढ़ा देले रहलीं। मालबाबू क संग धरा गइल। हम श्रद्धा-सहित उनुकर पलग्गी कइलीं। ऊ निहाल होइ के आसीरबाद दिहलन। उनुकरा से हमारि बहुत धराहि हो गइलि रहे। ओघरी क हमारि भेंट उनुकरा के सोना हो गइलि। धधाई के हमारि कान्हि धइ लिहलन- ''बचवा ! हमरा खातिर भगवाने हो के ए निरंजन टापू में चलि अइले ह। हम असक्कां परल हाथ पावं पीटत रहलीं ह। हमरो के अपना संगे लिअवले चलु।''

हमरा के मालबाबू क मदति करे में गौरव क अनुभव भइल- ''हकन हाक। हमार मन बड़ा सुखी होई जो रउवॉ के कान्हि धरा के घरे चोहंपा देइब। जो अउरी किछु सेवा होखे त कहीं।''

''बस, बस। ए घरी हमरा के एतने सेवा चाहति बा।''

ऊ हमरी कान्हि थाम्हि के गवें-गवें अहथिर चले लगलन। हमरा भेंटा गइला से उनुकरा के भरपूर तीहा हो गइल रहे। ऊ झेंपत-झखत ए देहि का समरथाइ आ असमरथाइ क बखान सुरू कइ दिहलन- 'इहे देहि ह कि भरत बोरा बेरेप उठाइ के कोसभर धावत रहली ह, दस पट्ठन के रोज जोर करावत रहलीं हं आ झूमर खेल का मैदान में पट्ठन का जोड़ा के पारा पारी मलपट धइके झंटहारि के फेंकि देत रहलीं ह। आजु उहे देंहि ह, कि अपने के ढोवे में लरखराइ जाति बा, उढुकि जाति बा आ ढमिला जाति बा। समय-समय क फेर ह। कहियो ई देहि पहाड़ पर छउकत चढ़ेले आ कहियो एकरा से अपना घर क चउकठो ना लंघांय। बुढ़उती बहुते खराब ह। एमे आपनि देहि अपना से ना ढोवाले।''

मालबाबू के उनुकरा दुवारे चोहंपा दिहलीं। ऊ हमार गुन बखावत अपना दुवार का ओसारा में पइठि गइलन आ हम अपना घरें चलि गइलीं।

एकरा दुइए बरिस बाद मालबाबू अपना दुवारे एगो खाटी पर गोड़ लटकाइ के बइठल रहलन। गोड़ में कइगो पकला हो गइल रहलन स। ओकरा के धोवे बदे नीबि क पतई डालि के पानी के खूब खदकवले रहलन। उनुकर एगो संगी उनुकरा मदति में जुटल रहलन। पलग्गी करत पुछलीं- ''माल बाबू! ई पकला तोहके बड़ा भोगावत बानऽ स। देहि गलि के मांड़ हो गइलि।'' हमरा ई कहते उनुकर संगी कहलन- ''बचवा! ई ऊ माल रहलन हं कि सइ पट्ठन का बीच में बिलगि जात रहलन ह। आ सभका नजरि इनिकरा पर गड़लि रहि जाति रहलि ह आ आजु इनिकरि गति ई ह। इनिकर अपने देहिं इनिकरा के भारी हो गइलि बा। ई इनिकरा से ढ़ोवाति नइखे, जे खड़े मरदन के फानि जात रहल ह, सरकस पट्ठन के पछाड़त रहल ह आ मनसोख गदकिहा के गदका छुवा देत रहल ह, त आजु थेघत चलत बा। भइया! इहे ई जिनिगी ह।''

ई सुनते मालबाबू मनसलन- 'बचवा। ई पुरूबही के

कवनो पाप कमाई रहलि ह, जेवना के भोगि रहल बानी। हम त भगवान से इहे बिनती करब कि हे भगवान जो एहू जनम में कवनो चूकि भइलि होखो त ओहू क डंड एही जनम में लगा द कि ए बचलि खोंचलि बुढउती का जिनिगी में भोगि लेईं। पुरूही क पुन्न कमाई ढेर रहलि ह, जेवना से सुख क जीवन ढेर जियलीं हं। कवनो पछतावा नइखे रहि गइल। अब जेवन भगवान क मरजी होई, तेवन ए सरीर पर आवत जाई आ अगिला जनम सुधारे बदे ओके भोगत जाए के बा। बस, ईश्वर से एतने बिनती बा कि चलते फिरते ई चोला बदलि जाइत।''

मालबाबू अपना पकलन के धोवे लगलन आ हम ओहिजा ले टसकि के अपना काम पर चलि गइलीं।

फोरा-फुनुसी आ अउरी बियाधिन से बजना-बजनी करत आ पयँतरा भाँजत मालबाबू सात-आठ बरिस ले कम समे ना लिहलन। कबो टनमना जासु, कबो लरखराइ जासु। अनुमान बा कि अस्सी बरिस के उमिरि ना हेलि पवलन कि खटपरूँ हेा गइलन। जे सुनत जा, इनिकरा से आखिरी भेंट बदे आवत जाव। महावीर सुकुल कहियो क इनिकर संगी रहलन। इनिकरा खाटी का पंजराँ जाइ के चक चिहाइ के कहलन- ''अरे, माल बाबू कहवाँ बानऽ ? हमरा के ई का देखावत बानी जा ?''

हम चिहाइ के कहलीं- '' सुकुल बाबा? रउवाँ इनिकरा संगे कलकत्ता बरिसन रहल बानी। संगे-संगे खइले-पीयले बानी जा, आ रउवाँ से इहाँ का नइखीं चिन्हात?''

का चिन्हीं? ई माल बाबू हउवन कि हाड़ क बनल आदमी क ढाँचा ह? माल बाबू रहितन त हे खटिया का पटिया ले हाथभर ऊपरे लउकतन। ना, ना, ई माल बाबू ना हउवन।''

मालबाबू हाथ जोरलन- सुकुल जी। पालागीं,पालागी। मालबाबू के लजवाईं जनि। इनिकरा के पहिचानीं। जब कुश्ती का दंगल में मालन के पछारे वाला पट्ठा माल बाबू के देखले रहलीं हँ त बुढ़उती से जूझि के ओराइल-बटुराइल आ एकदम ओहजल एहू माल बाबू के देखि लेईं, जेवन काल से बाजत बानऽ। काल बड़ा बारीक होला। ओसे बाजे बदे अपनहूँ के बारीक बने के परेला त रउवाँ सभे के कइसे लउकीं? जेवना देहि पर रउवाँ सभे मालिस कइले हईं आ अखाड़ा क पियरकी माटी रगराइलि ह ओह देहि क कुल्हि सामान जहवाँ भेजे के तहवाँ भेजि दिहलीं। बस, रउवाँ सभे का पलग्गी कइके अब चल देबे के बा।

सुकुल जी क आँखि भरि गइली स। किछु देर बदे उनुकरि बानी बन्न हो गइलि रहे। मालबाबू उनुकरा के उकसवलन- ''सुकुल जी! ई सरीर अब ढोवात नइखे।''

''त पछतावे का बा? ई देहि बहुते ढो चुकलि बा। अपना कुल-पलिवार क नांव कइलसि, अपना गाँव क पानी रखलसि आ अपना जनपद क गौरव बढावे में काम आइलि, तब एकरा ले अधिका एह देहि के ढोवे के रही का गइल?''

''सुकुल जी! जो अइसनि बाति बा त रउवाँ सभे का आसीरबाद से ई जीवन सफल हो गइल आ ए देहि क काम ओरा गइल। एके ढोवल बेकार बा। आसीरबाद देईं आ हम हाथ झारि के माया के झटकारि के चलता होईं। सुकुल जी! पालागीं।''

'' जीय ऽ, माल बाबू! जीय ऽ ।''

''अब हम का जीयब आ काहें खातिर जीयब? का दुनियां क ओठर सुने बदे?''

''ओठर सुने बदे ना। ए गाँव का नवहन के किछु नीक, मरदवुमी क काम करे खातिर उकसावे बदे। रउवाँ अइसनि करनी कइले बानी कि रउवाँ कबो ना मूवब। जले ई गाँव रही तले राउर नाँव रही। जब एहि देहि से निझान काम हो जाला तब आदमी अपना नाँव से जीयत रहि जाला।''

मालबाबू सुकुल जी के आखिरी हाथ जोरलन आ ऊ आखीरी आसीरबाद दिहलन। आठ बजे राति के सुकुल जी अपना घरे गइलन आ ओही दिने मालबाबू चार बजे भोर में महाजतरा पर चल दिहलन।

नया प्रकाशन

१- 'भोजपुरी मंगल-गीत' संकलन- श्रीमती राजकुमारी मिश्र संपादन- डा० जितेन्द्र नाथ मिश्र, मूल्य-१००/-सेवक प्रकाशन , ईश्वरगंगी, वाराणसी

२- ' बीना के तान ' गीत संग्रह गीतकार वैद्यनाथ पाण्डेय 'कोमल' , संपादक- गंगा प्रसाद अरुण मूल्य-५०/- प्रकाशन- जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद-१०२, जोन-११, बिरसानगर, जमशेदपुर - ८३१००४

३- ''जौ-जौ आगर'' कविता संग्रह भगवती प्रसाद द्विवेदी, मूल्य-१२५/- किताब पब्लिकेशन हाजीपुर रोड मुजफ्फरपुर- ८४२००२

४- ''ठेंगा'' (कहानी संग्रह)- भगवती प्रसाद द्विवेदी, मूल्य १२५/- किताब पब्लिकेशन हाजीपुर रोड मुजफ्फरपुर- ८४२००२

५. 'चउका बइठल महादेव' (कहानी संग्रह) डा० रमाशंकर श्रीवास्तव, मूल्य २२५/-, नवशीला प्रकाशन- ए-७५, श्रीराम कालोनी निलोठी एक्स. नांगलोई, दिल्ली-४१ ।

पण्डित जी के पतरा :–

१ मार्च से ३१ मई २००९ तक गोचर राशि फल विचार

– डॉ. नरेन्द्र कुमार तिवारी

मेष– चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ ।

३१ मई २००९ ले मेष राशि वाला के समय सामान्य बा। गुरू अउरी शनि मध्यम फल दिहें। पद प्रतिष्ठा के निगाह से बहुत अच्छा नइखे, पांचवे स्थान के शनि सन्तान के विषय में चिन्ता बनवले रहिहें। खर्च अधिक होई। ३० अप्रैल से गुरू के आपन जगह बदलला से लाभ होई। नौकरी, पदोन्नति परिवार में मंगल आदि होई। पद, प्रतिष्ठा, धन सम्पत्ति अउरी स्वास्थ्य में गिरावट रही। हनुमान चालीसा के रोज ११ बार पाठ कइला से सब शुभ होई। घर में मंगल कार्य होई। नौकरी, विवाह, व्यापार आदि में लाभ होई। ३० अप्रैल २००९ से समय में परिवर्तन होई। १,६,११ तारीख अउरी रविवार के दिन कवनो नया काम शुरू ना करेके चाही।

वृष- इ, उ, ए, ओ, बा, वी, वे, वो।

वृष राशि वालालो पर शनि के दैया चलता। शनि के वजह से आपस में विवाद अउरी आर्थिक तंगी रही। वृहस्पति के नौवा भाव में अइला से एक मई से शुभ समय चली धन, सन्तान, नौकरी में उन्नति होई। नौवा स्थान के राहु, दशवा के मंगल धन, धर्म बढावे वाला बाड़न। एगरहावाँ पर शुक्र शुभ फल देवे वाला बाड़े। शनि के अरिष्ट निवारण खातिर हनुमान चालीसा के पाठ अउरी शनिवार के सबेरे पीपल के पेड़ के जरी में पानी चढावके चाही आ तिलतेल के दीया जलावे के चाहीं। ५, १०, १५ तारीख तथा शनिवार के नया काम कइल उचित नइखे।

मिथुन- का, की, कू, ध, ङ, छ, के, को, हा।

मिथुन राशि वाला लोग के १ मार्च ०९ से ३१ मई ०९ तक के समय शुभ अउरी अशुभ, दूनो मिलल जुलल बा। नवें बुध ा धन यश बढ़इहें। दूसरे केतु के कारण देह से कश्ट रही। मुकदमा के विजय के योग बा। पारिवारिक विवाद सुलझी। आठवां गुरू ठीक फल ना दीहे। गुरू के शान्ति खातिर पीयर कपड़ा में हरदी दाहिना हाथ में बांधे चाहीं। कवनो पीयर कपड़ा जरूर पहिने के चाही अउरी गुरू के जय करेके चाही। इ सब कइला से परीक्षा में सफलता, नौकरी तथा आमदनी बढ़ी। ३० अप्रैल से हालात सुधरी। २, ७, १२ तारीख अउरी सोमार के दिन कोई शुभ काम ना शुरू करे के चाहीं।

कर्क- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो।

कर्क राशि वाला लोग के शनि के साढ़ेसाती के कारण मानसिक चिन्ता, अउरी अपने लोग से मन मुटाव बनल रही। सांतवां वृहस्पति अचानक धन लाभ करइहें। आठवें मंगल, शुक्र बैठ के रोग, विरोध आदि देबे के तैयार बाड़े। भगवान शिव के पूजा कइला से सब कष्ट कटि जाई। उद्योग धन्धा के योग बनी। बोली पर नियन्त्रण शुभ रही। सन्तान पक्ष के शुभ समाचार मिली। मांगलिक कार्य के योग बनता। १ मई २००९ के बाद विशेष शुभ योग बा। छूटल काम पूरा होई। तारीख २, ७, १२ अउरी बुधवार नया काम खातिर छोड़े के चाही।

सिंह- मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

सिंह राशि पर शनि साढेसाती चलता। सिंह राशि पर शनि बाडे। सिंह राशि के स्वामी सूर्य हवें। सूर्य अरू शनि में कट्टर दुश्मनी ह। एह से भय, रोग, झगड़ा वगैरह होई बाते बात में आपने लइका, घरनी आ साथ नाराज हो जाइहें। मुकदमा के कारण उलझन बनल रही। शान्ति खातिर २३ हजार शनि के जप, १०८ बार हनुमान चालिसा के पाठ करके चाहीं। इ उपाय कइला से जरूर सब तरफ से लाभ होई। सोचल काम पूरा होई। राजनैतिक प्रभाव बढ़ी। ३, ८, १३ तारीख तथा शनिवार एह समय शुभ नइखे।

कन्या- टो, पा, वी, पू, व, ण, ठ, पे, पो।

कन्या राशि के उपर शनि के साढ़ेसाती बा। मन बेचैन रही तथा हमेशा कवनो बात भय बनल रही। गोचर भाव वश पंचम स्थान पर गुरू के रहला से कवनो नुकसान के सम्भावना नइखे। वृहस्पति शुभ फल देबे वाला बाड़े। गुरू के कारण विद्या में सफलता नौकरी में स्थिरता अउरी घर में विवाह के योग बा। कवनों बड़ परीक्षा पास करे खातिर रूद्राभिषेक करावे के चाही। ५, १०,१५ तारीख अउरी शनिवार एह समय में ठीक नइखे।

तुला- रा, री, रू रे, रो ता, ती, तू, ते।

तुला राशि के लोग खातिर पूरा मई भर सामान्य रूप से शुभ बा। परिवार में विवाद उत्पन्न होई। जमीन खरीदायी अउरी घर बनी बाकी अड़चन आयी। वृहस्पति चौथे बैठ के काम बिगाड़ तारे। महतारी बाप के स्वास्थ्य खराब होई। चोट-चपेट के भी स्थिति बनी। वृहस्पति के जय कइला से लाभ होई। रोजगार धन्धा के कवनो जोगाड़ लागी। एह घरी गाड़ी खरीदल ठीक ना रही। ४,९,१४ तारीख अउरी गुरूवार एह समय में ठीक नइखे।

वृश्चिक - तो, ना, नी, नू, ने, नो, या यी, यू।

वृश्चिक राशि खातिर इ समय एकदम ठीक चलता। तीसरे वृहस्पति शुभ फल देवे वाला बाड़े। यश बढ़ी। पढ़ाई में सफलता मिली। विवाह वगैरह कवनो शुभ काम होई। दुश्मन के हारि होई। घर, वाहन के योग बा। चौथा स्थान के मंगल कुछ खराब बाड़े। मंगल के शान्ति खातिर लाल कपड़ा पहिने के चाही

अउरी हनुमानजी के पूजा करेके चाही। भाई बहिन के पक्ष में कवनो शुभ काम होई। १, ६, ११ तारीख अउरी शुक्रवार शुभ नइखे।
धनु - ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे।

धनु राशि वाला लोग के समय ठीक चलता। यकल काम पूरा होई मार्च, अप्रैल, मई तीनों महीना पहिले से ठीक चली राजनीति में भी बढ़िया रही। गाड़ी, जमीन, घर के लाभ होई। स्वास्थ्य में सुधार होई। शुभ काम में रूपया खर्च होई। दाम्पत्य जीवन सुखमय रही। दूसरा स्थान यश प्रतिष्ठा पर हानि पहुँचइहे अउरी तबियत खराब करिहे। राहु के कारण बाहि और पेट में परेशानी होई। एकरा खातिर लाजावर्त चाँदी में मढवा के दाहिना हाथ के बीचली अंगुरी में पहिने के चाहीं। दिनांक ३, ८, १३ तथा शुक्रवार शुभ नइखे।

मकर- भो, जा, जी, (जू, जे, जो) खी, खू, खे, खो, गा, गी।

मर राशि के लोग शनि के दैया के कारण मानसिक रूप से परेशान रहिहें। काम होत होत बिगड़ जाई। विरोधिन के प्रभाव बढ़ी। आर्थिक परेशानी रखिहें। रक्तचाप (ब्लडप्रेशर) से बाचे खातिर रोज सबेरे नहाके भगवान सूर्य के अर्घ्य देवे के चाहीं। साझेदारी वाला काम में झगड़ा चाहे मनमोटाव होई ए से एह समय साझा के काम ना करेके चाही। बजरंगवाण के पाठ से लाभ होई। ४,६,१४ तारीख अउरी मंगलवार के एह समय नया काम ना करेके चाहीं।

कुम्भ- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दी।

कुम्भ राशि वाला लोगन के समय १ मार्च से ३१ मई २००६ तक साधारण रही। अपयश मिले के योग बा। पहिला स्थान के मंगल शनि के घर में रहला के कारण कवनो आपरेशन के योग बनावता। प्रवासी जीवन जीये के योग ा। उद्योग धन्धा में लाभ होई। सातवा शनि के कारण एह राशि वाला लोग के स्त्री चाहे पति के शारीरिक कष्ट होई। न्यायालय के काम में सफलता मिली। लइकन के पढ़ाई सफल होई। लक्ष्मी के प्राप्ति खातिर श्रीसूक्त से घी के हवन करावे के चाही। दिनांक ३, ८, १३ अउरी गुरूवार के दिन शुभ काम कइल उचित नइखे।

मीन- दी, दू, धन, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

मीन राशि के लोगन के समय ठीक चलता। व्यापार के योजना सफल होई। निर्माण काम में सफलता मिली। मीन राशि के सूर्य कलेश, चिन्ता दिहें। राजनीति के तरफ झुकाव बढ़ी। राजनीति में सफलता मिली। व्यापार में लाभ होई। परीक्षा में सफलता मिली। घर में मंगल काम होई। मान, पद, प्रतिष्ठा में बढ़न्ती होई। पांचवा स्थान के केतु के कारण जल्दीबाजी में अनुचित निर्णय हो जाई। शरीर में पीड़ा भी रहीं। मन चंचल रही। शिवजी पर जल चढ़ावल लाभकारी रही। ५, १०, १५ अउरी शुक्रवार शुभ काम शुरू करे लायक नइखे।

बियाह के साइत (तिथि)

संवत् २०६६ वैशाख सुदी ८ अष्टमी दिन शनिवार तारीख २-५-२००९ के रात में १.४४ बजे के बाद
संवत् २०६६ वैशाख सुदी ११ एकादशी दिन मंगलवार तारीख ५-५-२००९ रातभर
संवत् २०६६ वैशाख सुदी ११ त्रयोदशी दिन गुरूवार तारीख ७-५-२००९ रात्रि ११.१३ बजे के बाद
संवत् २०६६ वैशाख सुदी ४ चतुर्दशी दिन शुक्रवार तारीख ८-५-२००९ रात ८.२५ बजे से १२.५ तक
संवत् २०६६ वैशाख सुदी १५ पूर्णिमा दिन शनिवार तारीख ९-५-२००९ रात में १.२६ के बाद रातभर
संवत् २०६६ ज्येष्ठ वदी १ एकम दिन रविवार तारीख १०-५-२००९ रातभर भोर में ३.१५ बजे
संवत् २०६६ ज्येष्ठ वदी ५ पंचमी दिन गुरूवार तारीख १४-५-२००९ रात भर
संवत् २०६६ ज्येष्ठ वदी १० दशमी दिन मंगलवार तारीख १९-५-२००९ के रात्रि ११ बजे के बाद
संवत् २०६६ ज्येष्ठ वदी ११ एकदशी दिन बुधवार तारीख २०-५-२००९ रातभर
संवत् २०६६ ज्येष्ठ वदी १ एकम दिन सोमवार २५-५-२००९ रातभर
संवत् २०६६ ज्येष्ठ वदी २ द्वितीया मंगलवार तारीख २६-५-२००९ दिन में लगन शाम ४.२० बजे तक दिनभर
संवत् २०६६ ज्येष्ठ वदी ७ सप्तमी दिन शनिवार ३०-५-२००९ रात्रि में १.४८ बजे तक
संवत् २०६६ ज्येष्ठ वदी नवमी दिन सोमवार तारीख १-६-२००९ दिनभर रातभर
संवत् २०६६ ज्येष्ठ वदी १० दशमी दिन मंगलवार तारीख २ जून २००९ दिनभर रातभर
संवत् २०६६ ज्येष्ठ वदी १२ द्वादशी ४ जून २००९ रात में १०.६ बजे के बाद
संवत् २०६६ आषाढ़ वदी १ एकम दिन सोमवार तारीख ८ जून २००९ रातभर
संवत २०६६ आषाढ़ वदी १३ त्रयोदषी दिन रविवार तारीख २१ जून २००९ सायं ४.४९ के बाद रातभर
संवत २०९९ आषाढ़ वदी ४ चतुर्थी दिन शुक्रवार तारीख २६ जून २००९ रात १२.३० बजे के बाद
संवत् २०६६ आषाढ़ वदी ६ षष्ठी दिन रविवार तारीख २८ जून २००९ रातभर
संवत् २०६६ आषाढ़ वदी ७ सप्तमी दिन सोमवार तारीख २९ जून २००९ रात्रि में ९.२९ बजे के बाद रातभर
संवत् २०६६ आषाढ़ वदी ९ नवमी दिन बुधवार १ जुलाई २००९ रातभर

भोजपुरी वेवसाइट : भोजपुरिया भौकाल

– डा० ओ० पी० सिंह

भोजपुयिन के ई खासियत होला कि अउरी कुछु होखे भा ना, भौकाल बनावे में कवनो कमी ना रहे देला लोग, खाये में, चटनी भेटाय चाहे ना पोदीना जरूर बावन बिगहा में बोवाला।

आजु से सात बरिस पहिले के बात ह5 दुनिया में इन्टरनेट त पहिलहीं आ चुकल रहवे बाकिर हिन्दुस्तान खातिर नया बात रहुवे। दुनिया का कोना कोना में फइलल भोजपुरिया नेट पर आपन मौजूदगी देखावे में पीछे ना रहलन आ अंगरेजी में भोजपुरी के बात शुरू हो गइल। शुरूआत कइलन शशिभूषण राय आ विनय पाण्डे, याहू पर एगो समूह बनावल गइल भोजपुरी संसार का नाम से आ देश दुनिया के भोजपुरिया धीरे धीरे ओह से जुड़े लगलन आ भोजपुरी संसार एगो बड़हन समूह बन गइल।

एह सब से दूर भारत का एगो कोना में बलिया से शुरू भइल अंजोरिया डॉट काम। शुरू करे वाला आदमी अबूझ रहे, भाषा से लगाव रहे, बाकिर बजार का बारीकी से ना त परिचित रहे ना ओतना कूबत रहे। भोजपुरी के अनेकन विश्व सम्मेलन आ संस्था में से कवनो से जुड़लो ना रहे। ना त साहित्यकार रहे, ना साहित्यिक उठापटक से परिचित रहे।

भोजपुरी डॉट काम का नाम से सबसे पुरान वेवसाइट १० सितम्बर १९९९ के रजिस्टर्ड करावल गइल रहे, जवन आजुओ चालू बा, एकर कर्णधार हउवन विनय पाण्डे, जे रांची में प्रतिष्ठित इंजीनियर हउवन। भोजपुरी के सबसे पुरनियन में से एक विनय पाण्डे कबो कवनो दोसरा वेवसाइट के प्रोत्साहित कइले होखस, एकर कवनो प्रमाण नइखे। हँ जब एगो बरियार साइट खुलल त ओकर विरोध जरूर कइलन। विरोध के पर्याप्त कारणों रहे, बाकिर ओह पर तनी देर बाद चर्चा कइल जाई।

दोसर साइट रहे भोजपुरी डॉट आर्ग जवन १६ नवम्बर २००२ के रजिस्टर्ड भइल आ इहो अबले चालू बा बाकिर तब दुनू साइट अंगरेजी भाषा में रहुवे आ अंगरेजिये में भोजपुरी के बात होखल करे, एही रेगिस्तान में तब अजोरिया आपन पहिलका डेग धइलसि।

अंजोरिया के रजिस्ट्रेशन १९ जुलाई २००३ के भइल, शुरूआते से अंजोरिया देवनागरी लिपि में भोजपुरी भाषा के पहिलका वेवसाइट का रूप में शुरू भइल। एगो नौसिखिया का तरह उठत गिरत अंजोरिया कई बेर ढहल ढिमिलाइल, बाकिर अपना लगन आ सनक में कवनो कमी ना आवे दिहलसि, आजु अंजोरिया भोजपुरी भाषा के प्रतिनिधि साहित्य से ले के फिल्मी चाट तक सब कुछ परोस रहल बिया आ दुनिया भर के भोजपुरिया लोग एह साइट के अपना रहल बा।

सब कुछ शान्त रहे जब ले एह तालाब में एगो ढेला पड़ल भोजपुरी संसार डॉट काम का नाम से नाम सुनते भोजपुरी के पुरनिया लोग बिगड़ल काहे कि ऊ लोग एही नाम से एगो समूह चलावत रहे आ स्वाभाविक रूप से केहू एहबात के पसन्द ना करी कि ओकरा नाम से मिलत जुलत कवनो दोसर साइट शुरू होखे। खास कर के तब जब नयका साइट व्यावसायिक होखे आ पुरनका गैर व्यावसायिक तब भोजपुरी संसार डाट काम चलावे वाला लोग १३ अक्टूबर २००५ के भोजपुरिया डाट काम के नाम से एगो मजगर साइट शुरू कइलसि आ पूरा दुनिया में भोजपुरी के डंका बाज गइल, तकनीकी जानकारी संगठन आ व्यावसयिक दूरदर्शिता से भोजपुरिया डॉट काम देखते देखत सबसे लोकप्रिय भोजपुरी साइट बन गइल।

कहल जाता कि सफलता मिलला पर दू तरह के प्रतिक्रिया होला, कुछ लोग सफलता पर सवार होके अपना लक्ष्य का तरफ बढ़ निकलेला आ कुछ लोग पर सफलता सवार हो जाले आ ऊ लोग अपना सोझा दोसरा के कुछ ना समुझे, बाकिर अइसनका लोग ढेर दिन ले केहू का साथे चलियो ना पावे, दू आदमी एह साइट के शुरू कइलन आ देखते दुनू जाना में आपसी विवाद शुरू हो गइल कि के बड़ के छोट केकर योगदान बेसी आ केकर कम, आ तब दूनु जने अलगा हो गइलन आ शुरू भइल एगो नया दौर आपसी कड़ुवाहट के, एक दोसरा का नाम से मिलत जुलत साइट खुले लगली सन। केहू लिट्टी चोखा खोलल त दोसरा लिट्टी चोखा का बीचे एगो हाइफन लगा के शुरू हो गइलन भोजपुरी दुनिया खुलल त त duniyä का बदले dunia इस्तेमाल कर लिहल गइल। बिदेसिया शुरू भइल त bidesia का बदले bidesiya चला लिहल गइल। मिलत जुलत नाम का सहारे दोसरा के पाठक के अपना साइट पर बोलावे का एह कोशिश से भोजपुरी वेब प्रकाशकन का बीचे एगो अइसन शीत युद्ध शुरू हो गइल जवन आजु ले जारी बा। केहू का केहू पर विश्वास नइखे।

भोजपुरी भाषा के एह शीत युद्ध से कतना नुकसान भइल आ कतना हो रहल बा एकर अनुमान भविष्य लगाई बाकिर आजु का भोजपुरी के प्रकाशक लोग अपना जिम्मेदारी से भाग ना पाई।

आजु का समय में भोजपुरी के बहुते साइट चल रहल

बाड़ी सन। नयका फैशन के सोशल साइट भोजपुरिया डॉट आर्ग शुरू भइल त देखते देखत भोजपुरी एक्सप्रेस डाट काम शुरू हो गइल। भोजपुरी एक्सप्रेस डॉट काम अपना बेहतर संगठन आ प्रस्तुतिकरण से आज भोजपुरियन के सबसे बड़ सोशल साइट न के उभरल बा।

भोजपुरी पत्रिकन के साइट का रूप में 'द संडे इंडियन' के भोजपुरी संस्करण, भोजपुरी संसार पत्रिका,भोजपुरी सिनेमा के पत्रिका भोजपुरी सिटी, आ अब बहुत जल्दिये 'पातियो' वेबसाइट का रूप में उपलब्ध बा, भोजपुरी वेबसाइटन के सबसे बड़ लिंक अंजोरिया पर उपलब्ध बा, बाकिर ओहिजो एकाध नाम से विरक्ति देखे के मिल जाई।

स्थिति ई बा कि कूल्हि सक्रियता का बावजूद, भोजपुरी के वेबसाइट, अभी अपना-अपना ढंग से, आगा बढ़ रहल बाड़ी स बात दीगर बा कि भोजपुरिया लोगन क रूझान एमें बढ़ल नइखे।

(जल्दिये प्रकाशित होखे वाला खण्ड काव्य के कुछ अंश.....)

सीता जी के खोज

- हीरा लाल 'हीरा'

भार सहाइल ना हनुमंत के
भूधर डोलल त्रास समाइल।
पेड़ लता गिरि ऊपर से
मुँह के बल आ भुइयाँ भहराइल।
कोसन ले धरती हिलली, भुँइ
डोल से शंकित लोग पराइल।
सागर ले जल हो भयभीत
पखारन पाँव लगे चलि आइल।

सागर के जल खोह समाइल
जीव चराचर बाहर अइले।
आपस के सब बैर भुलाइ
शिकारी शिकार सँगे बटुरइले।
राम के दूत के रूप विचित्र
निहारि-निहारि सभे अगरइले।
सादर दे वरदान महामुनि
खोहन में दोसरा चलि गइले।

क्रोध से लाल शरीर भइल अरु
आँखिन से निकले चिनगारी।
भानु अकास में दूइ उगे
जनु ताप से सृष्टि जरावत सारी।
देखि प्रसन्न हो वानर, देव लो
गावल गीति बजावल ताली।

अंगद का परतीति भइल
हनुमान जी आजु ना अइहन खाली।

दाबि पहाड़ कपीश उड़े
हिय में सियराम के नाम बसा के।
पाँव के दाब सहाइल ना गिरि
वन्दन कइलन माथ नवा के।
वेग से अइसन आन्ही कि संग में
पेड़ लता चलले उड़िया के।
लागेला राहि धरावे बदे कुछ
दूर ले संगे संगे लरिया के।

सिन्धु बुला कहले मैनाक से
राम के काज में हाथ बटावऽ।
लाँघल बा हमके न असान
टिका पीठिया विश्राम करावऽ।
पैर छुआ कहले कपि नाथ कि
ना हमके इहवाँ विलमावऽ।
देइ अशीश खुशी मन से
मैनाक हमें जल्दी से पठावऽ।

●

आवे वाली फिलिम ''प्रेम के रोग भइल''

- अशोक भाटिया

स्व० बच्चा बाबू के शानदार बंगला, आजमगढ़ में शायद एह ले बढ़ के कवनो दोसर बंगला ना होखी। बंगला का बाहर बड़का सहन आ सहन में लागल शादी के पण्डाल आ भितरी मण्डप में शादी के सगरी तइयारी हो चुकल रहे। दुलहिन के बाप परेशान होके चक्कर काटत रहलन। कबो बारात का स्वागत में बइठल अँउघात लोगन के देखस, त कबो भितरी जा के बेटी के निहारस। भोर होखे चलल रहे आ फेरा के मुहूर्त बीत चुकल रहे, बारात के स्वागत में बइठल घराती सूतत रहलन। जे जागलो रहे से अँउघाइल रहे। बइठल त बइठल खाड़ो लोग खड़हीं खड़े सूतत रहे। लड़की के बाप ठाकुर भूपति सिंह, जे आपन गांव के दबंग रहलन उनकर सबुर टूट चुकल रहे बहरी निकल के देखलन की साथी मंगरूवा खाडे खाड सूतल रहे। बमकल भूपति मंगरूवा के एक घूंसा लगवलन आ कहलन रे सार, मंगरूवा, हमार नींद खराब करके सार हरामी तें सूतत बाड़े? दोसरका खंभा का सहारे सूतल हीरा ऑख मीसे लागल ओकरा से भूपति कहत बाड़न, 'हरे' देख, इहे साला कमीना कहले रहुवे कि राम प्रसाद का बेटा से अपना बेटी के बियाह करा दऽ। एह सार के बाति मान के हमार त निनिगी हराम हो गइल।'' फेर महतारी के गरिवावत मंगरूवा के फेर एक झापड़ मारत बा। इंतजार में बइठल लोग अब उठ के जाये लागत बा। एही में एगो पत्रकारों होता जे भूपति के ताना मारत कहत बा, काल्हु के हेडलाइन का बनी भूपति? 'दुलहिनिया भीतर आ दुलहवा फरार'! बस फेर का रहुवे, भूपति आपन रिवाल्वर निकाल लेत बा आ सबका के धमका के जबरिया फेर से बइठा देत बा।

अतने में बहरी से बैंड के आवाज आवत बा, बारात आइल जान के सभे बरात के स्वागत में बहरी निकलत बा। दुल्हा जीप में से उतरत बा। सेहरा बन्हले दुल्हा पहिले त भूपति का गले मिलत बा फेर तुरते भूपति पर पिस्तौल तान के कहत बा। '' हम तोहार गरूर खतम करे खातिर नकली दुलहा बन के आइल बानी। बस शुरू हो जात बा मार कुटाई आ जब मार कुटाई अपना चरम पर चहुँपत बा त एक ओर से आवाज आवत बा, ''कट''।

कैमरा रूक जात बा आ टूटल फुटल लोग अपना असली रूप में आवे के कोशिश करे लागत बा। माने कि जवन होत रहुवे ऊ एगो सिनेमा के सीन रहुवे। सिनेमा रहुवे ''प्रेम के रोग भइल''। सीन फिल्मवला का बाद निर्देशक फारूक सिद्दीकी आ फाइट मास्टर आर पी यादव अगिला सीन के तइयारी करे लागत बाड़े। इहो बतावत चलीं कि लड़की के बाप भूपति के किरदार करत रहलन अवधेश मिश्रा जे आपना डायलाग में गारियन का फेरवट से भोजपुरी के ओंकारा बनल जात बाडन । मंगरूवा के किरदार करत रहलन संतोष श्रीवास्तव , रामप्रसाद रहलें गोपाल राय, हीरा का किरदार में खुदे हीरे रहलन एयाज खान । एह सीन में पत्रकार का किरदार में फिलिम के प्रचारक अशोक भाटिया अपनही रहले ।

निर्देशक का रुप में फारुक सिद्दीकी अब ले हिन्दी के 'जिगर', विजयपथ 'द डान' 'विश्वविधाता' 'कहानी किस्मत की' आ 'रेवती' फिलिमन के निर्देषित कर चुकल बाड़न। कहलन कि भोजपुरी में उनुकर ई पहिलका फिलिम हऽ। बिहार के हउवन से भोजपुरी उनका घुट्टी में बा। कहलन कि ढेर लोग कहले रहुवे भोजपुरी फिलिम के निर्देषन खातिर बाकिर कवनों फिलिम ना सकरलन। सकरलन तब जब उनुका दिनेशलाल यादव का रूप में सही निर्माता मिल गइल। अब भरपूर उत्साह आ भरोसा का साथ ई फिलिम बनवा रहल बाड़न। प्रेम के रोग भइल एगो छोटहन कस्बा के कहानी हऽ जहवाँ के लोग जुबान दे देव त फेर पाछा ना हटे। भलही जान दे देबे के पड़े। ई बिहारी संस्कृति के नायाबपनहऽ जहाँ जुबाने सब कुछ हो ला। एह प्रेम कहानी में एगो संदेश बा कि लिखल करम के लेख, हाय रे केहू समझि ना पावेला...।

एह सीन का बारे में बतलावत ऊ आगा कहलन कि ठाकुर के बेटी पूजा, पाखी हेगड़े, के शादी बा। सब तइयारी पूरा हो चुकल बा बाकिर ऐन समय पर असली दुलहा कवनो कारण से गायब हो जात बा आ मौका के फायदा उठा के स्थानीय विधायक के भाई, एजाज, दुल्हा बन के आ जात बा। ठाकुर के बेटी गाँव का पटवारी का बेटा, दिनेश लाल निरहुआ, रवि से प्यार करत बिया जे कालेज में ओकरा साथे पढत रहे। फेर जइसन कि अमूमन गांवन में होला ओही तरह के रंजिश के कहानी बा, एह फिलिम में रोमांस, हास्य, ऐक्शन सब कुछ बा, जइसन कि मसाला फिलिमन में होखेला। उनका पूरा विश्वास बा कि ई फिलिम एह साल के सफलतम फिलिम बनी।

निर्माता प्रवेश लाल यादव से बात भइल त कहलन कि 'चलनी के चालल दुलहा' उनुका कंपनी के पहिलका फिलिम हऽ जवन मई में रिलीज होखे जा रहल बा। दूसरका ई फिलिम, 'प्रेम के रोग भइल' हऽ जवना के शूटिंग लगभग पूरा हो गइल बा।

फिलिम के कार्यकारी निर्माता मनोज टाइगर भोजपुरी सिनेमा में अपना हास्य कलाकारी खातिर मशहूर हो चुकल बाडें । ए फिलिम में उनको जलवा देखे के मिली फिलिम के हीरो निरहुवा से बात भइल त कहलन कि पहिलके हालि जब ऊ एह फिलिम के कहानी फारुक सद्दिदकी से सुनलन त बहुत प्रभावित हो गइलन। उनका बुझाइल जे ई कहानी परिपूर्ण बा आ जिनिगी से जुडल बा । कहलन कि निर्माता का रुप में अइसनके कहानी पर फिलिम बनावल चाहेलन , जवना से भोजपुरी सिनेमा के स्तर उठावल जा सके । साथे साथे दर्शकनो के कुछ नया आ स्वस्थ मनोरंजन भेटाव । प्रेम के रोग भइल में अपना किरदार का बारे में बतलावत कि ऊ एगो अइसन स्टूडेंट के रोल कइले बाडे जे बहुते जिद्दी ह आ जवन चाहेला तवन करिये के भा लेइये के माने ला । अपना महतारी के बेहद चाहेला आ जेकर पूरा दुनिया महतारिये

में बा। महतारी का आंख में ऊ आंसू ना देख सके ।

कहानी में बहुत कुछ अइसन बा जवना के अबहीं ना बतलावल जा सके आ दर्शकन के चिहुकावे वाला होखी । फिलिम के हीरोइन पाखी हेगडे आ निरहुवा के जोड़ी भोजपुरिया दर्शकन के सबले प्रिय जोड़ी बन गइल बा। एह जोड़ी के सफलता के अंदाजा एही से लगा लीं कि अबले ई लोग छह गो सफल फिलिम दे चुकल बा। निरहुआ रिक्शावाला, कइसे कहीं तोहरा से प्यार हो गईल, निरहुआ चलल ससुराल, खिलाड़ी नंबर वन, प्रतिज्ञा, आ विधाता, तीन गो फिलिम आजुकाल्हु सेट पर बाड़ी सन, नरसंहार, दीवाना, आ निरहुआ तांगेवाला, एकरा अलावे ऊ चलनी के चालल दुलहा में मेहमान कलाकार का तरह बाड़ी।

प्रेम के रोग भइल में पाखी के किरदार एगो संस्कारी लड़की का तरह बा जे अपना बाप से कबो सवाल जवाब ना करे। बड़ घराना के एह लड़की के बाप गांव के एगो दबंग हउवन आ निरहुआ उनुके साथ टकरा जात बा। बाप बाड़े कि बात बात में अपना खानदान के मिसाल देत रहेलन। पाखी कहली कि उनका भरोसा बा कि ई फिलिम निरहुआ का साथे उनुकर एगो आउर मनोरंजक आ दिलचस्प फिलिम बन के रही।

●●

गजल

❑ **भगवती प्रसाद द्विवेदी**

(एक)

जनतंत्री ऐलान भइल
मतदाता भगवान भइल।

जेहल से कैदी भागल
राज मिलल आसान भइल।

मोबाइल बा जगह जगह
रोटी अंतर्धान भइल।

सांड़ मस्त हरियरी चरे
ठूंठ मये अरमान भइल।

लेके कर्जा घीव पियल
राजा के फरमान भइल।

(दू)

चोला गिरगिट जइसन बा
दिल ना जाने कइसन बा।

मछरी गटके, राम भजे
साधू, बकुला अइसन बा।

'बेडसीन' चौरस्ते पर
कइसन-कइसन फइशन बा।

अजबे इ अन्हेर नगरी
चउपट राजा हइसन बा।

कुदरत, मन, सिरिजन घाही
जन, जइसन के तइसन बा।

(एक)

- अशोक द्विवेदी

कबले ओइसन दिन आई
कि जेकर जेतना
ओतना पाई!
राम दोहाई ! राम दोहाई!!

साहेब का कुक्कुर के चाही
बटर लगावल रोटी
अंडा बिना नून के अउरी
ताजा काटल बोटी
अदिमी बुझला देखि-देखि के
सूखल ओठ चबाई! राम दोहाई!!

काल्हु किरासन, परसों चीनी
नरसों खाद बँटाई
पिन्सिन आ आवास मिली
कुछ दिहले पर, फरियाई
बिछिली भइल सभत्तर बाबू
जे जाई, ऊहे बिछिलाई! राम दोहाई!!

बढ़ल रेट बा मजदूरी के
लूटल-बेर्‌हल जारी
मुखिया कुल भुगतान करी
आई पइसा सरकारी
गारंटी बा रोजगार के
आधा मिली, न पूरा पाई! राम दोहाई!!

कम मेहनत में, अधिका आमद
वाला चाही काम
छूट मिलो, अनुदान मिलो
आराम मिलो आ दाम
दियवाई जे अइसन-तइसन
ऊ, ओमे आधा अधियाई! राम दोहाई!!

हमनी के बा डाढ़ा लागल
चिचिरी खोंचल भाग
पाथर पाला आन्ही पानी
आग-भउर के राग
दइब बिगरले करम पहिलहीं
ऊपर से राउर ठकुराई! राम दोहाई!!

(दू)

सबुर धरीं कबले,
हमहन के, मत कंगाल करीं
साठ बरिस किरिसवनी
अब मत जीयल काल करीं!

नोच-चोंथ के खा गइनी सब
कुछऊ ना बोंचल
डर से रउरा पटा गइल सब
बूझल ना जाँचल
पिंड छोड़ि दीं हमनी के
मत अँखिया लाल करीं !

जतना जुरल, न आँटल ओमे
जुटल न लुग्गा-लत्ता
हमनी खातिर, सबुर क थरिया
रउरा खातिर सत्ता
बकरी 'लोग' बहुत मिमियाइल
तबो हलाल करीं!

डांड़-मेड़ से नाद चरन ले
अनखुन ए सरकार
महुवा इमली-आम न चाहीं
ले लीं खेत-बधार
अझुरावल केतना सझुराईं
मत बेहाल करीं!

सरिहावत, सझुरावत सगरी
मनका छिटा गइल
अदिमी, अदिमी के समाज
टुकड़न में बँटा गइल
राउर करनी बा इयाद
अब, आपन ख्याल करीं !

रजि० नं०– आर०एन० 3548/79 (वर्ष 1979)

'पाती'/मार्च, 2009

स्वामित्व, प्रकाशक– सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, 47– टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)
खातिर रवि आफसेट, बलिया से मुद्रित।